मानवीय बोध कथाएँ
भाग - 2

आइए ! विश्व शांति के लिए हाथ बढ़ाए ...

प्रकाशक
करुणा अन्तरराष्ट्रीय, चेन्नई

❖ पुस्तक : **मानवीय बोध कथाएँ (भाग-2)**

❖ विधा : कहानी, आलेख एवं प्रेरक प्रसंग

❖ प्रस्तुति : **दुलीचन्द जैन,** एम.ए., साहित्यरत्न

❖ सम्पादन : **डॉ. भद्रेशकुमार जैन,** एम.ए., साहित्यरत्न, पीएच.डी.

❖ प्रथम संस्करण : अगस्त 2016, प्रति 4001

❖ द्वितीय संस्करणः सितम्बर 2018, प्रति 3001

❖ मूल्य : 30 रुपये मात्र

❖ प्रकाशक : **करुणा अन्तरराष्ट्रीय**
मुणोत सेन्टर, 2nd Floor
343, ट्रिप्लीकेन हाई रोड, चेन्नई - 600 005.
फोन : 044-2859 1724, 2859 1714, 95514 96900
email : info@karunainternational.org

❖ साज-सज्जा : **श्रीमती सुनीता** एम.ए., एम.लिब.

❖ मुद्रक : **डॉ. भद्रेशकुमार जैन,** प्रबंधक : **जैन प्रकाशन केन्द्र**
पुराना नं. 53, आदियप्पा नायकन स्ट्रीट, साहुकारपेट
चेन्नई-79. Cell : 93822 91400

हमारा मूलभूत कर्त्तव्य :

भारत के प्रत्येक नागरिक का यह दायित्व है कि वह प्राकृतिक पर्यावरण, जिसमें वन, झीलें, नदियाँ एवं वन्य-जन्तु सम्मिलित हैं, को संरक्षण एवं विकास प्रदान करें और समस्त प्राणियों के प्रति करुणा एवं सहानुभूति का बर्ताव करें।

– भारत का संविधान, अनुच्छेद 51A (G)

करुणा प्रार्थना

सत्वेषु मैत्रीं गुणिषु प्रमोदं,
क्लिेष्टेषु जीवेषु कृपा परत्वं ।
माध्यस्थ भावं विपरीत वृत्तौ,
सदा ममात्मा विदधातु देव ।।

अर्थात् - प्राणिमात्र के प्रति मैत्री, गुणज्ञों के प्रति प्रमोद, व्यथितों के प्रति करुणा एवं अपने से विपरीत भाव रखने वालों के प्रति तटस्थ वृत्ति - हे प्रभो ! मेरी आत्मा में ये विचार सुस्थिर हों ।

विश्व मैत्री की मंगल भावना

मैत्री भाव का पवित्र झरना, मेरे हृदय में बहा करे ।
शुभ हो सारे विश्व जीवों का, नित्य भावना रहा करे ।।

गुणवानों के गुण दर्शन से, मन यह मेरा नृत्य करे ।
गुणीजनों के गुण पालन से जीवन मेरा धन्य बने ।।

दीन, क्रूर और दयाहीन को, देख के दिल यह भर जाये ।
करुणा भीगी आँखों में से, सेवा भाव उभर आये ।।

भूले भटके जीवन पथिक को, मार्ग दिखाने खड़ा रहूँ ।
करे उपेक्षा प्रेमपंथ की, तो भी समता चित्त धरूँ ।।

"चित्रभानु" की यही भावना, मैत्री घर-घर सुख लाये ।
"करुणा क्लब" की यही भावना, मैत्री घर-घर सुख लाये ।
वैर-विरोध के भाव छोड़कर, गीत प्रेम के सब गाये ।।

*विद्यालय-प्रार्थना के बाद '**करुणा प्रार्थना**' का अर्थ सहित गान प्रतिदिन तथा '**विश्व मैत्री की मंगल भावना**' गीत का सप्ताह में किसी एक दिन सामूहिक गान कराना चाहिए ।*

प्रकाशकीय

बच्चों के मन में मानवीय जीवन मूल्यों की स्थापना यथा उनमें करुणा, प्रेम एवं सौहार्द के भाव जाग्रत करने हेतु विद्यालयों/महाविद्यालयों में करुणा क्लबें स्थापित करने का अभियान सन् 1995 में 'करुणा अन्तरराष्ट्रीय' संस्थान द्वारा प्रारंभ किया गया । वर्तमान में यह अभियान 2500 से भी अधिक करुणा क्लबों में अपनी नवीनतम योजनाओं के साथ सतत गतिशील है । करुणा क्लब की सदस्यता सभी विद्यार्थियों के लिए बिना किसी जाति, धर्म या अन्य किसी भेदभाव के सहज उपलब्ध है ।

पिछले दशक से दूरदर्शन एवं इंटरनेट के पाश्चात्य सभ्यता संबंधी कार्यक्रमों ने भारतीय संस्कृति को प्रदूषित करना आरंभ कर दिया है । वर्तमान का बालक शिक्षा प्राप्त करने एवं मनोरंजन के अनेक साधनों में अति व्यस्त है । ऐसे में बच्चों को आकर्षित करने के लिए बाल कहानियां एक उत्तम साधन है । कथाएं बहुत ही थोड़े में, सहज ही में, बड़ी सीख दे देती हैं । गांधीजी को आजीवन सत्य पालन की शिक्षा 'सत्य हरिश्चन्द्र' नाटक पढ़ने से ही मिली थी । इसी प्रकार कहानियां बच्चों के जीवन निर्माण में भी अपना अमूल्य योगदान दे सकती हैं । इसी दृष्टि से करुणा अंतर्राष्ट्रीय ने ''करुणा की कथाएँ'' (भाग-1) पुस्तक का प्रथम प्रकाशन सन् 2006 में, ''करुणा की कथाएँ'' (भाग-2) का प्रथम प्रकाशन सन् 2009 में किया । ये दोनों पुस्तकें अंग्रेजी और तमिल भाषा में भी उपलब्ध है ।

''मानवीय बोध कथाएं'' भाग-1 का प्रथम प्रकाशन सन् 2011 में तथा ''मानवीय बोध कथाएं'' भाग-2 का प्रथम प्रकाशन 2016 में किया गया ।

प्रस्तुत पुस्तक में प्रयुक्त समस्त सामग्री हेतु हम प्रकाशकों एवं सभी कहानीकारों के प्रति अपना हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं । साथ ही स्पष्ट किया जाता है कि इन पुस्तकों का उपयोग मात्र विद्यार्थियों को सुसंस्कृत करने हेतु ही किया जाता है तथा विद्यालयों में ये पुस्तकें निःशुल्क वितरित की जाती है ।

उल्लेखनीय है कि सन् 2008 से संस्थान उपरोक्त पुस्तकों के आधार पर प्रतिवर्ष राष्ट्रीय प्रतियोगिता का आयोजन करते हुए 18,00000/- रुपए की राशि पुरस्कार स्वरूप विद्यार्थियों में वितरित कर चुका हैं ।

दुलीचन्द जैन	**कैलाशमल दुगड़**	**पदमकुमार जे. टाटिया**
चेयरमेन	अध्यक्ष	महामंत्री

अनुक्रम

1.	सरलता और महानता	1
2.	सोने का नेवला	4
3.	चिड़ियाघर की सैर	7
4.	कहानी एक चित्र की	11
5.	जार्ज वाशिंगटन	14
6.	चरित्र का महत्व	17
7.	अशर्फियां	19
8.	महात्मा बुद्ध और वृक्ष	22
9.	शोर प्रदूषण	25
10.	सपने हुए पूरे	27
11.	अनोखा वनस्पति जगत्	32
12.	राजा दिलीप का सेवा भाव	35
13.	मूर्खों के प्रति करुणा	37
14.	जानवरों से सीखें : जीवन की सीख	41
15.	पेड़–पौधे और फूल	47
16.	शिष्य आरूणि	51
17.	कुत्ते ने जान बचाई	54
18.	सोने में जड़ी तस्वीर	57

प्रेरक प्रसंग :

1.	मां की सीख	60
2.	ईमानदारी	62
3.	सच्चाई : गोपालकृष्ण गोखले	64
4.	मातृ–पितृ–कर्तव्यनिष्ठ	66
5.	वहाँ एक ही आदमी है	68
6.	मानवता सबसे बड़ा धर्म	70
7.	निराला का निराला दान	71
8.	इंसानियत के दर्शन	73
9.	सच्ची सेवा भावना	75
10.	दीप से दीप जलाओ : ईश्वरचन्द्र विद्यासागर	76
11.	महामना मालवीयजी	77
12.	शाकाहार सामग्री	80

सरलता और महानता

अध्यापक कक्षा में आए तो विद्यार्थी एक साथ कहने लगे - "सर ! आज हम पुस्तक नहीं पढ़ेंगे । कल आपने अच्छी-अच्छी कहानियाँ सुनाने का वचन दिया था ।

"मुझे याद है । मैं आपको कहानियाँ नहीं ऐसी घटनाएँ सुनाऊँगा, जो आपको बहुत अच्छी लगेंगी । बताइए ! आप तैयार हैं ?" - अध्यापक ने कहा ।

"जी सर ! एक साथ आवाज आई ।"

"आज सबसे पहले ऐसे व्यक्ति के जीवन के विषय में बताता हूँ, जो बहुत ही निर्धन परिवार का था । आप सबने 'अब्राहिम लिंकन का नाम सुना है ? अध्यापक ने पूछा । "जी हाँ ! वे अमेरिका के राष्ट्रपति थे ।' एक छात्रा ने बताया । अध्यापकजी आगे बताने लगे ।

अब्राहम लिंकन के पिता मोची थे । वे जूते सीने का काम करते थे । अब्राहम लिंकन अमेरिका के राष्ट्रपति बने तो वे वहाँ की सीनेट में बोलने के लिए खड़े हुए । सीनेट के कुछ सदस्यों को बड़ा कष्ट था कि एक मोची का लड़का उनके देश का राष्ट्रपति बन गया था ।

एक सदस्य ने व्यंग्य करते हुए कहा- "अब्राहम लिंकन ! अमेरिका के राष्ट्रपति बन जाने पर अधिक घमंड मत करें । मैं जानता हूँ आपके पिता जूते सीने का काम करते थे । राष्ट्रपति बन जाने पर पिता को मत भूल जाना ।"

अब्राहम लिंकन ने उस व्यक्ति की बात का बुरा नहीं माना । यदि और होता तो शायद क्रुद्ध हो जाता पर उनकी आँखों में आँसू भर आए । वे रूँधे गले से उस व्यक्ति के प्रति आभार प्रकट करते हुए कहने लगे- "प्रिय मित्र ! उचित समय पर पिताजी का स्मरण कराके आपने मुझ पर अमिट उपकार किया है । वे अब इस संसार में नहीं हैं । मुझे उन पर गर्व है । वे अच्छे मोची थे । उन्होंने कभी किसी के गलत जूते नहीं सिले । वे कुशल कारीगर थे । आज उनका स्मरण करके मुझे गर्व हो रहा है कि मैं उनका

पुत्र हूँ, मैं शायद उतना अच्छा राष्ट्रपति न बन सकूँ, जितने अच्छे वे कारीगर थे ।'' अब्राहम लिंकन का उत्तर सुनकर सीनेट में सन्नाटा छा गया ।

अध्यापक थोड़ी देर के लिए रूके और कहने लगे, 'ऐसे महान् थे अब्राहम लिंकन । हमें झूठी शान में अपने जीवन की वास्तविकता को नहीं भूल जाना चाहिए । माता-पिता धनी हो या निर्धन, हमें उनका आदर और सम्मान करना चाहिए । वे हमारे जन्मदाता हैं । वे हमारा पालन करते है । वे हमें उचित शिक्षा दिलाते हैं । वे हमें पैरों पर खड़ा होना सिखाते है ।''

''सर ! हम हमेशा अपने माता-पिता का आदर करते हैं । बड़े होकर भी हम उनका आदर करते रहेंगे ।' - आशीष ने कहा । 'सर ! ऐसी ही कोई और घटना सुनाइए ।' कमलप्रीत ने कहा । अध्यापक कुछ देर सोचते रहे फिर बोले- ''आप सब लालबहादुर शास्त्री के विषय में जानते हैं ?''

''जी सर ! वे पंडित जवाहरलाल नेहरू के पश्चात् भारत के प्रधानमंत्री बने थे ।'' रश्मि ने उत्तर दिया ।

''लाल बहादुर शास्त्री का जन्म एक साधारण परिवार में हुआ था । वे स्वतंत्रता-सेनानी थे । यह घटना उस समय की है, जब वे उत्तर प्रदेश सरकार के गृहमंत्री थे ।'' इतना कहकर अध्यापक घटना सुनाने लगे ।

लाल बहादुर शास्त्री सरल और सीधे-सादे व्यक्ति थे । उत्तर प्रदेश के गृहमंत्री बनकर वे सरकारी आवास में रहने लगे । गर्मियों के दिन थे । एक

दिन सरकारी विभाग की ओर से उनके कमरे में कूलर लगा दिया गया ।

परिवार के सदस्य प्रसन्न हो गए । गर्मियों में चैन तो मिलेगा । लाल बहादुर शास्त्री शाम को कार्यालय से लौटे । उन्हें कूलर लग जाने के विषय में बताया गया । वे थोड़ी देर खामोश रहे । फिर कहने लगे- "कूलर लगाकर अपनी आदत खराब नहीं करनी चाहिए । सारी उम्र मंत्री के बंगले में तो रहेंगे नहीं । हो सकता है इलाहाबाद के अपने पुराने घर में ही रहना पड़े । एक बार आराम की आदत पड़ गई तो आगे बड़ी कठिनाई होगी ।" इतना कहकर शास्त्री जी ने फोन किया और सरकारी कर्मचारी को बुलवाकर कूलर हटवा दिया ।

अध्यापक बताने लग- "अपनी सरलता, ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा से लाल बहादुर शास्त्री भारत के प्रधानमंत्री बने । वे 18 महीने प्रधानमंत्री रहे । इस मध्य सन् 1965 में पाकिस्तान ने भारत पर आक्रमण कर दिया । प्रधानमंत्री के रूप में उन्होंने दृढ़ संकल्प शक्ति का परिचय दिया । उस युद्ध में पाकिस्तान बुरी तरह हार गया । ऐसे वीर थे लालबहादुर शास्त्री । उन्होंने "जय जवान जय किसान" का नारा दिया था ।"

ऐसे सरल और महान् व्यक्तित्व के धनी थे- अब्राहम लिंकन और लालबहादुर शास्त्रीजी ।

प्रश्नावली :

(क) वाक्य पढ़कर सही या गलत बताइए -

1. अब्राहम लिंकन अपने पिता के मोची होने पर शर्मिन्दा थे । ( )
2. घर में कूलर लगा देखकर लालबहादुर शास्त्री खुश हो गए । ( )
3. अब्राहम लिंकन अमेरिका के राष्ट्रपति बने । ( )
4. लालबहादुर शास्त्री सरल और सीधे-सादे व्यक्ति थे । ( )

(ख) "जय जवान जय किसान" का नारा किसने दिया ?

पाठ बोध :

हम जीवन में कितने भी ऊँचे क्यों न उठ जाएं पर अपनी गरीबी के दिन कभी नहीं भूलने चाहिए ।

सोने का नेवला

(महाभारत के युद्ध की समाप्ति पर अश्वमेध यज्ञ करते हुए युधिष्ठिर। यज्ञशाला का दृश्य)

ब्राह्मण : अरे! उस नेवले को देखो। बड़ा विचित्र नेवला है।

कमलानंद : यह तो आधा सोने का है। मैंने अपने जीवन में ऐसा नेवला आज तक नहीं देखा !

(युधिष्ठिर सहित सबका ध्यान नेवले पर जाता है।)

नेवला : (मनुष्यों के समान हँसते हुए) महाराज युधिष्ठिर ! आप अश्वमेध यज्ञ करके धन आदि का दान कर रहे हैं। मुझे यह देखकर हँसी आ रही है।

युधिष्ठिर : क्या मेरे दान में कोई कमी रह गई है ?

नेवला : मै तो आपकी महानता और अश्वमेध यज्ञ की चर्चा सुनकर ही यहाँ आया था। परंतु मेरा यहाँ आना व्यर्थ गया।

(यज्ञ में उपस्थित ब्राह्मण, पाण्डव और अन्य लोग नेवले की बातें ध्यान से सुनने लगते हैं।)

युधिष्ठिर : आप कौन हैं ? क्या यज्ञ में आपको कोई त्रुटि नजर आई है ? क्या किसी ने अपमान कर दिया है, आपका ?

नेवला : हे धर्मपुत्र युधिष्ठिर ! मैं साधरण नेवला हूँ। आप मेरा शरीर देख रहे हैं। यह आधा सोने का हो गया है। मैं यहाँ इसलिए आया था कि आपके पुण्य से शायद मेरा पूरा शरीर सोने का बन जाएगा। ऐसा हुआ नहीं।

युधिष्ठिर : हे नेवले ! तुम्हारा आधा शरीर सोने का कैसे हो गया ?

नेवला : ये लंबी कहानी है।

ब्राह्मण : धर्मराज ! सुनिए ! रामनगर गाँव में मूलचंद नामक ब्राह्मण रहता था। वह निर्धन ब्राह्मण खेतों से अन्न चुनकर लाता था। इससे वह अपने परिवार का गुजारा चलाता था। एक बार अकाल पड़ गया। खेत सूख

गए । ब्राह्मण को खेतों से अनाज नहीं मिलता । वह परिवार के साथ भूखा ही रह जाता । एक बार ब्राह्मण परिवार को आठ दिन तक खाने को कुछ नहीं मिला । ब्राह्मण पर दया करके एक किसान ने उसे एक किलो गेहूँ दे दिया । ब्राह्मणी ने उसे पीसा । उससे भोजन तैयार किया । वे भोजन करने बैठे ही थे कि उनके यहाँ भूख से व्याकुल एक यात्री आ गया । उसकी दशा देखकर उन्होंने उसे भोजन करा दिया । वे स्वयं भूखे रह गए परंतु मुख पर अद्‌भुत संतोष और आनंद का भाव था ।

(इतना कहकर नेवले का गला भर आया । वह रुककर फिर बोला)

भूख से व्याकुल ब्राह्मण और उसके परिवार के सदस्यों की मृत्यु हो गई । भूमि पर भोजन के कुछ कण गिर गए थे । मैंने उस भोजन का स्पर्श किया तो मेरा आधा शरीर सोने का हो गया । उस ब्राह्मण परिवार की दानशीलता का पुण्य मानो मुझे मिल गया । हे युधिष्ठिर ! मूलचंद ब्राह्मण, उसकी पत्नी और उसके पुत्र तथा पुत्रवधू ने भूखे अतिथि को भोजन कराके जो कार्य किया उसकी बराबरी आपका यह अश्वमेध यज्ञ नहीं कर सका ।

(नेवले का प्रस्थान)

युधिष्ठिर : मैं अश्वमेध यज्ञ करके स्वयं को महान् समझ रहा था । नेवले ने मेरे अहंकार को चूर-चूर कर दिया है ।

ब्राह्मण : महाराज युधिष्ठिर ! किसी भूखे को भोजन कराना इसीलिए यज्ञ के समान कहा जाता है । (पटाक्षेप)

प्रश्नावली :

(क) रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिये -

1. युधिष्ठिर ..... यज्ञ करवा रहे थे ।
2. नेवले ने युधिष्ठिर के ..... को चूर-चूर कर दिया ।
3. नेवला अपने बाकी आधे ..... को सोने का बनाने के उद्देश्य से यज्ञ में आया ।
4. किसी भूखे को ..... कराना यज्ञ के समान कहा जाता है ।

(ख) नेवले का आधा शरीर सोने का कैसे हो गया ? पूरा वृत्तान्त अपने शब्दों में लिखिए ।

पाठ बोध :

भूखे को भोजन कराना तथा अतिथि सत्कार करना पुण्य की श्रेणी में आता है ।

आपका मनोरंजन - निर्दोष की पीड़ा

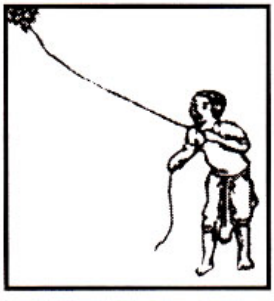

तितली, भौंरे एवं चिड़ियों को न तो पकड़ें एवं न ही उनको लेकर किसी भी तरह से खेंलें ।

चिड़ियाघर की सैर

अध्यापिका ने कहा, 'हम कल चिड़ियाघर देखने जाएँगे । सभी अपने साथ खाने के लिए टिफिन के साथ-साथ फल आदि भी लाएँ ।'

अध्यापिका का इतना कहना था कि सभी विद्यार्थी खुशी से उछल पड़े ।

अगले दिन सब विद्यार्थी तैयार होकर आए । विद्यालय की बस में सभी चिड़ियाघर पहुँचे । नई दिल्ली में बना यह चिड़ियाघर भारत के सबसे अच्छे चिड़ियाघरों में से एक है । यह प्रगति मैदान और पुराने किले के निकट है । अध्यापिकाओं ने विद्यार्थियों को पंक्तिबद्ध किया एवं उन्होंने टिकटें खरीदीं । चिड़ियाघर के एक अधिकारी ने विद्यार्थियों का स्वागत किया । उन्होंने विद्यार्थियों को इन बातों का ध्यान रखने के लिए कहा-

1. पशुओं के बाड़े में प्रवेश नहीं करना चाहिए । इससे पशु आक्रमण कर सकते हैं । जहाँ पर जालियाँ या रेलिंग लगी हो, उनके आगे नहीं जाना चाहिए ।

2. पशुओं को खाने के लिए कुछ भी नहीं देना चाहिए । चिड़ियाघर की ओर से प्रत्येक पशु को संतुलित भोजन दिया जाता है । दर्शकों द्वारा दिए गए पदार्थों से उनका पेट खराब हो सकता है ।

3. पशुओं के बाड़े में पॉलिथीन की थैलियाँ नहीं फेंकनी चाहिए । ये उनके शरीर के अंदर फँसकर उनकी मृत्यु का कारण बन सकती हैं ।

4. पशु-पक्षियों के बाड़ों या घोंसलों के पास चिल्लाना नहीं चाहिए । ट्रांजिस्टर या टेप-रिकार्डर नहीं बजाने चाहिएँ । इससे उनके शांतिपूर्ण पर्यावरण को हानि पहुँचती है ।

5. खाने-पीने का बचा सामान, पॉलिथीन की थैलियाँ, खाली डिब्बे आदि कूड़ेदान में डालने चाहिएँ । इससे चिड़ियाघर साफ रहता है ।

6. चिड़ियाघर में अपने पालतू कुत्ते नहीं लाने चाहिए ।

'बच्चों ! इन बातों को समझ गए ?' एक अध्यापिका ने पूछा । 'जी

हाँ मैम !' सभी विद्यार्थियों ने एक साथ कहा । एक गाइड उन्हें चिड़ियाघर दिखाने ले चला । विद्यार्थियों ने सबसे पहले सिक्का हिरण और काला हिरण देखा । हिमालय के कालू भालू के बाड़ से होकर उन्होंने नील गायें देखीं । उसके साथ ही बाघ अपने बाड़े में घूम रहे थे । थोड़ी दूरी पर भारी-भरकम गैंड़ों ने विद्यार्थियों को खूब लुभाया । इसके साथ ही तेंदुओं का बाड़ा था ।

'तेंदुआ बहुत फुर्तीला होता है ।' अध्यापिका ने बच्चों को बताया । सभी बब्बर शेर को देखना चाहते थे । अध्यापिकाएँ उन्हें बब्बर शेरों के बाड़े के पास लाईं । पीले रंग के बब्बर शेरों की गरदन पर बड़े-बड़े बाल थे । उन्हें देखकर सचमुच भय लग रहा था । बब्बर शेर को देखने के बाद सभी सफेद शेर को देखकर हैरान रह गए ।

'मैम! यह सफेद शेर कहाँ से लाया गया है ?' एक छात्रा ने पूछा ।

''रीवा के निकटवर्ती मध्यप्रदेश के वनों से लाया गया है ! सफेद शेर दुनिया में बहुत कम है । यह भारतीय सफेद शेर है ।'' अध्यापिका ने बताया ।

कुछ ही दूरी पर घड़ियाल लेटे थे । एक घड़ियाल किनारे पर धूप सेक रहा था । कुछ आगे ऊदबिलाव उछल-कूद कर रहे थे ।

घूमते-घूमते विद्यार्थी थक गए । अध्यापिकाओं ने उन्हें नल से हाथ धोने के लिए कहा । सभी घास के मैदान पर बैठ गए । सबने खाना खाया । आधा घंटा आराम करके सब फिर चल पड़े ।

एक और तालाब में मगरमच्छ तैर रहे थे । उसके साथ दरियाई घोड़ा पानी में लेटा हुआ था । कुछ आगे जाने पर विद्यार्थियों की खुशी का ठिकाना न रहा । उनके सामने वनमानुष बैठे थे । उनके बच्चे कभी पेड़ों से लटक रहे थे तो कभी एक-दूसरे के पीछे भाग रहे थे । बड़े-बड़े वनमानुष एकदम मनुष्यों जैसे ही लग रहे थे ।

'मैम! हमने हाथी तो देखे ही नहीं ?' ध्रुव ने कहा ।

'चलो! हाथी देखने चलें ।' अध्यापिका ने कहा ।

एक बाड़े में भारतीय हाथी थे । इतने बड़े हाथी को देखकर कुछ बच्चे तालियाँ बजाने लगे । हाथियों को देखकर सभी पक्षियों को देखने चले । गाइड उन्हें एक विशेष अहाते में ले गया । वहाँ रंग-बिरंगे तरह-तरह के पक्षी उड़ रहे थे । किसी की चोंच लाल थी तो किसी की हरी । किसी की चोंच पतली थी तो किसी की लंबी । वे फुदक-फुदककर इधर से उधर उड़ रहे थे ।

विद्यार्थी चिड़ियाघर के कुछ भागों को न देख सके । समय पर विद्यालय जो लौटना था ।

'हम शीघ्र ही फिर चिड़ियाघर देखने आएँगे ।' अध्यापिका ने कहा तो एक विद्यार्थी बोल उठा- "मैम ! हम कल फिर से आएँगे ।" अध्यापिका उत्तर देती तभी एक छात्रा ने पूछ लिया- 'मैम ! यह चिड़ियाघर कितना पुराना है ?"

"सभी आराम से बैठ जाओ । मैं तुम्हें इस चिड़ियाघर के विषय में सब कुछ बताती हूँ ।" - अध्यापिका ने कहा । सभी विद्यार्थी बैठ गए । वे बताने लगीं- "इस चिड़ियाघर का उद्घाटन 1 नवम्बर सन् 1959 को हुआ

था । यह 176 एकड़ में फैला हुआ है । इसमें लगभग 1300 पशु हैं । इसे देखने के लिए प्रतिवर्ष लगभग 16 लाख दर्शक आते हैं ।"

अध्यापिका की बातें सुनकर विद्यार्थी हैरान रह गए ।

तभी अध्यापिका बताने लगी- "तुम्हें जानकर आश्चर्य होगा कि चिड़ियाघर में विदेशों से भी पक्षी उड़कर आते हैं । दक्षिण-पूर्व एशिया, यूरोप और साइबेरिया के क्षेत्रों से हजारों किलोमीटर की उड़ान भरकर सर्दियों में यहाँ सारस और उसकी जाति के पक्षी आते हैं । वे घोंसले बनाते हैं । उनमें अंडे देते हैं । चिड़ियाघर में चार तालाब हैं । ये पक्षी आकर इनके आसपास रहते हैं ।'

"यह हमारे लिए ही नहीं पक्षियों के लिए भी बहुत लाभकारी है ।" एक विद्यार्थी ने कहा ।

'मैं आज का दिन कभी न भूल सकूँगा ।' एक छात्र ने कहा ।

सभी विद्यार्थी बस में बैठकर विद्यालय लौट गए ।

प्रश्नावली :

(क) वाक्य पूर्ण कीजिये -

1. तेंदुआ बहुत ..... ।
2. चिड़ियाघर में विदेशों से भी पक्षी ..... ।
3. बड़े-बड़े वनमानुष एकदम मनुष्यों जैसे..... ।
4. चिड़ियाघर का उद्घाटन ..... ।
5. इसे देखने के लिए प्रतिवर्ष लगभग ..... ।

(ख) चिड़ियाघर जाने पर ध्यान रखने योग्य बातें क्या-क्या हैं ?

पाठ बोध :

पशु-पक्षी हमारे मित्र हैं,

हमें उनके प्रति कृतज्ञता का भाव रखना चाहिये ।

कहानी एक चित्र की

"देखो ! शशांक यह चित्र कैसा है ?" राकेश ने एक चित्र दिखाते हुए अपने मित्र से पूछा ।

"सुन्दर, बहुत ही सुन्दर !" शशांक उसे देखकर उछल पड़ा । फिर पूछने लगा- "पर दोस्त ! तुमने इसे कैसे बनाया है ?"

"कबूतर, चिड़ियों के झड़े हुए पंखों और जली हुई तीलियों आदि बेकार की चीजों से बना है । मेरी माँ ने इन बेकार की वस्तुओं का उपयोग करना सिखाया है ।" राकेश ने उत्तर दिया ।

शशांक उस चित्र को दो पल ठगा-सा देखता रहा । फिर मन ही मन उसने सोचा कि वह उससे भी अच्छा सुन्दर चित्र बनाकर राकेश को दिखायेगा ।

कई दिनों तक शशांक सोचता रहा । फिर सहसा ही उसे एक विचार आया कि यदि पूरा चित्र तितलियों के पंखों से बनाया जाय तो वह बड़ा ही सुन्दर लगेगा । फिर क्या था ? शशांक अपने विचार को पूरा करने में जुट गया । उसके घर के पास ही उसके मित्र का एक बहुत बड़ा बाग था । वह प्रतिदिन उसमें जाने लगा । पर तितलियों के झड़े हुए पंख खोजने में शशांक को बड़ी ही परेशानी हुई । यों उस बाग में रंग-बिरंगी, मनभावनी अनेकों तितलियां उड़ती थीं । एक फूल से दूसरे फूल पर मंडराती थीं, पर वहां मरी हुई तितलियों के पंख बहुत ही कम मिल पाते थे ।

शरारती शशांक ने अब दूसरा ही उपाय निकाल लिया । वह फूलों का रस पीती तितलियों को धागा फंसाकर पकड़ने लगा । धागे में फंसकर तितलियां छटपटातीं पर शशांक उन्हें छोड़ने का नाम भी न लेता । उल्टे उनकी छटपटाहट देखकर प्रसन्न ही होता ।

बाग के रखवालों को शशांक की यह आदत तनिक भी अच्छी नहीं लगती । "देखो शशांक ! किसी भी जीव को कष्ट देना अच्छी बात नहीं ।

जो आत्मा हममें है, वही सब में है । जैसे हमें शरीर पर कष्ट होता है, वैसे ही छोटे-छोटे जीव-जन्तुओं को भी होता है । हम कुछ कर पायें तो उनकी सेवा-सहायता ही करें । उन्हें कष्ट देना हमारी मूर्खता है ।" पर शशांक था कि उस पर इन बातों का कोई भी प्रभाव नहीं पड़ता था । वह एक कान से सुनता दूसरे से निकाल देता ।

एक दिन शशांक आम के पेड़ की छाया में बैठकर चित्र बना रहा था । तभी चुपचाप उसके पिता के मित्र और बाग के मालिक उसके पीछे आकर खड़े हो गये । बाग के रखवाले से उन्हें सारी बात पहले से ही पता लग चुकी थी । उन्होंने पीछे से आकर शशांक का चित्र छीन लिया और उसके देखते-देखते टुकड़े-टुकड़े करके उसे हवा में उड़ा दिया । यह देखकर शशांक स्तब्ध रह गया । तभी उसने सुना कड़कती आवाज में, उसके मित्र के पिताजी कह रहे थे- "समझ में नहीं आता कि आखिर क्या सोचकर तुमने तितलियों को मारना शुरू किया ? क्यों तुम्हें नाचती, बल खाती, जीती-जागती तितलियां नहीं भायीं और तुम उनके प्राण लेने पर उतारू हो गये । तुम मनुष्य नहीं राक्षस हो ।"

"राक्षस ! राक्षस कैसे चाचाजी ?" शशांक के मुँह से बस इतना ही निकला । "जो अपने थोड़े से सुख के लिये, थोड़े से स्वार्थ के लिये, क्षणिक प्रसन्नता के लिए दूसरों को सताये और उनके प्राणों को भी ले ले, वह राक्षस नहीं तो और क्या है ? मनुष्य कहलाने का अधिकारी तो वही होता है, जो औरों के लिये हंसते-हंसते अपने सुखों को न्यौछावर कर देता है ।" चाचाजी गंभीर होकर कह रहे थे ।

अब शशांक चुपचाप सिर झुकाये सुनता रहा । चाचा फिर बोले- "सोचो तो जरा ! जितनी तितलियां तुमने मारी हैं, सारी की सारी तुम्हारे शरीर से आकर चिपक जायें, मुंह पर फड़फड़ाने लगे, तुमसे बदला लेने लगे, तो कैसा लगेगा तुम्हें ? याद रखो किसी को सताकर हम कभी सुखी नहीं रह सकते । कभी न कभी हमको इसका दण्ड मिलता ही है । ईश्वर के यहाँ देर

हो सकती है, पर अंधेर नहीं ।" अपराधी-सा शशांक कह रहा था- "मैंने सोचा था चाचाजी कि एक सुन्दर-सा चित्र बन जाएगा ।" "बेटे ! तुम्हें चित्र बनाना है, तो रंग-बिरंगे फूलों की झड़ी हुई पंखड़ियों, झड़े हुए तरह-तरह के पत्तों से बनाओ । वह सौन्दर्य, जिसके मूल में प्राणों की बलि हो उसकी प्रशंसा नहीं की जा सकती । उसकी तो जितनी उपेक्षा की जाये, जितनी निन्दा की जाये वह बहुत कम है ।" चाचाजी ने कहा ।

"आगे से ऐसा नहीं करूंगा ।" यह कहकर शशांक चुपचाप वहाँ से चल दिया । अपनी गलती उसकी समझ में आ रही थी । रास्ते भर वह सोचता जा रहा था कि चाचाजी ठीक ही कह रहे थे कि अपने स्वार्थ के लिये दूसरों का अहित करना मनुष्यता नहीं है ।

प्रश्नावली :

(क) उत्तर लिखिये -

1. राकेश ने चित्र किन-किन चीजों से बनाया था ?
2. शशांक ने चित्र बनाने के लिए क्या गलती की ?
3. बाग के रखवालों ने शशांक को क्या समझाया ?
4. 'तुम मनुष्य नहीं राक्षस हो' किसने कहा ?

(ख) वाक्य को पूर्ण कीजिये -

चाचाजी ठीक ही कह रहे थे कि अपने स्वार्थ के लिए दूसरों का अहित करना ..... ।

पाठ बोध :

ईश्वर ने मानव को सब प्राणियों में श्रेष्ठ बनाया है l
अत: ऐसा कोई कृत्य न करो, जिससे तुम्हें
'दानव' या 'पशु' की उपाधि मिले l

जार्ज वाशिंगटन

जार्ज नाम का एक छोटा बालक था। वह लगभग आठ-दस वर्ष का था। एक दिन उसने अपने पिताजी से कहा- "आप मुझे एक वस्तु उपहार में दीजिएगा?" उन्होंने कहा- "बेटा मेरे पास जो भी है, सब तो तुम्हारा ही है।" उसने कहा- मुझे उपहार में कुल्हाड़ी दे दीजिए।

पिताजी हैरान हुए। कुल्हाड़ी भी कोई उपहार माँगता है। फिर भी बच्चे की इच्छा पूरी करने के लिए उन्होंने उसे एक कुल्हाड़ी लाकर दे दी।

कुल्हाड़ी पाकर जॉर्ज बहुत खुश हुआ। यह कुल्हाड़ी कैसा काम करती है, यह जानने के लिए वह घर के बगीचे में आ गया। बिना सोचे-समझे उसने बगीचे की झाड़ियाँ एक-एक कर काट डाली। उन्हें काटने में बड़ा मजा आ रहा था। उसके सामने पौधे का जो भी हिस्सा आता वह उसे 'खचाक्' से काट देता।

बगीचे के बीचो-बीच सेव का भारी पेड़ था। वह पेड़ के पास आ गया और उसके तने पर कुल्हाड़ी से वार करने लगा।

वह तब तक कुल्हाड़ी मारता रहा, जब तक पेड़ का मोटा तना टूट कर पूरा पेड़ एक तरफ ना गिर गया। ऐसा करके वह बुरी तरह थक गया। वह घर के अंदर जाकर बिस्तर पर सो गया।

शाम को जॉर्ज जब घर लौटकर आए, बगीचे की यह हालत देखी तो गुस्से में चीखने-चिल्लाने लगे, "कौन है वह बेफकूफ ! जिसने मेरे बगीचे की यह हालत की है। मैं उसे जिंदा नहीं छोड़ूँगा।" उन्होंने गुस्से में थर्राते हुए कहा। उनके गुस्से को देखते हुए किसी ने उनके सामने मुँह नहीं खोला।

जार्ज ने अपने पिताजी को इतने गुस्से में पहले कभी नहीं देखा था। वह उन्हें गुस्से में देखकर घबरा गया पर वह सच्चा और बहादुर बच्चा था। उसने सोचा- "जो भी हो देखा जाएगा। आखिर सच तो बताना ही पड़ेगा। इतनी बड़ी गलती की है, सजा तो मिलनी चाहिए।"

यह सोचकर वह पिताजी के पास आया और बोला- 'यह सब मैंने किया है पिताजी ! अब मुझे भी देखकर बहुत अफसोस हो रहा है । मैंने बिना सोचे-समझे इन बेचारे पौधों पर कुल्हाड़ी चलाई है पर मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ, भविष्य में ऐसा कुछ नहीं करूँगा ।"

पिताजी यह सब सुनकर हैरान रह गए । वे बोले- 'मेरे इतने सुंदर बगीचे को इतनी बेदर्दी से उजाड़कर और मेरे सामने खड़े होकर कह रहे हो कि मैंने किया यह सब । क्या आपको पिटाई से जरा भी डर नहीं लगता ?"

सचमुच जॉर्ज के पिताजी ने बड़ी मेहनत और लगन से एक-एक पौधे की देखभाल की थी । आज अपने सुंदर बगीचे की दुर्दशा देखकर उनका हृदय कराह उठा था ।

"नहीं, पिताजी यह बात नहीं है । पिटाई से सभी को डर लगता है, मुझे भी, पर मैंने सोचा जब गलती की है तो छिपाने से क्या फायदा । मैंने आपको सच्चाई बता दी, आप जो चाहे सजा दीजिए ।' जॉर्ज ने नम्रता के साथ कहा ।

इतना कहकर वह एक अपराधी की तरह अपने पिताजी के सामने सिर झुकाकर खड़ा हो गया । वह अपने पिताजी से बहुत प्यार करता था ।

उन्हें इस तरह उदास देखकर वह खुद को भी कोस रहा था । एक छोटे से बच्चे के मुँह से ईमानदारी, सच्चाई, निडरता से भरी बातें सुनकर पिताजी गर्व से फूले नहीं समाए । उन्होंने उसे गले लगाते हुए कहा- "बेटा ! तुम एक दिन बहुत बड़े आदमी बनोगे ।" यही जॉर्ज बड़ा होकर अमेरिका का पहला राष्ट्रपति बना ।

प्रश्नावली :

(क) उत्तर लिखिए -

1. जार्ज ने उपहार में अपने पिता से क्या मांगा ?
2. किसने कहा- "बेटा ! तुम एक दिन बहुत बड़े आदमी बनोगे ।"
3. जार्ज बड़ा होकर क्या बना ?

(ख) वाक्य पढ़कर सही या गलत बताइए -

1. जार्ज अपने पिताजी से बहुत प्यार करता था । ( )
2. जार्ज ने बगीचे के पेड़-पौधे काट दिए । ( )

(ग) बगीचे की दुर्दशा करने पर भी पिताजी जार्ज को कोई सजा नहीं दे सके । क्यों ?

पाठ बोध :

नादानी/अनजाने में गलती हो जाए तो उसे छिपाने की चेष्टा करने के बजाय स्वीकार कर माफी मांग लेनी चाहिए ।

आपका मनोरंजन - निर्दोष की पीड़ा

खेल अथवा मनोरंजन के लिये
किसी चिड़िया अथवा अन्य पक्षी
को गुलेल का निशाना
मत बनाइये।

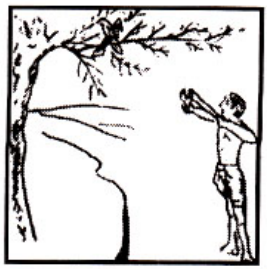

चरित्र का महत्व

बच्चों ! तुमने सरदार वल्लभ भाई पटेल का नाम सुना होगा । वे आधुनिक भारत के प्रमुख निर्माता थे । आजादी की लड़ाई में उनका महत्त्वपूर्ण योगदान तो था ही, भारत की आजादी के बाद उसके पुनः निर्माण में भी उन्होंने उल्लेखनीय कार्य किए । भारत-भर में बिखरी 600 से भी अधिक देशी रियासतों को उन्होंने जिस कौशल से आपस में मिलाया, वह अपने ढंग की एक अनूठी उपलब्धि थी । यही कारण है कि उन्हें 'लौह-पुरूष' कहा जाता है ।

एक बार चरित्र के महत्व की चर्चा चल रही थी । गाँधी जी भी वहाँ मौजूद थे । गाँधी जी ने कहा- "हम अच्छे चाल-चलन को चरित्र कह सकते हैं । जिसका चाल-चलन अच्छा होता है, वही चरित्रवान कहलाता है ।"

चरित्र ही मनुष्यों को बड़ा बनाता है, धन नहीं । "धन गया तो कुछ नहीं गया, स्वास्थ्य गया तो कुछ गया मगर चरित्र गया तो सब कुछ गया ।" इसका मतलब है चरित्र ही मनुष्यों की वास्तविक सम्पत्ति है । चरित्र के बल पर ही भगवान् बुद्ध एशिया की ज्योति कहलाए । उन्होंने दुनियां को ऐसा अहिंसा का पाठ पढ़ाया, जिसे हमारे पूज्य बापू ने महत्त्व दिया ।

सदाचार के साथ शिष्टाचार का भी घनिष्ठ संबंध है । जहाँ यह दोनों विद्यमान होते हैं, वहाँ आत्म-गौरव भी मुख्य अंग होता है । मनुष्य के 'स्व' का सम्मान । आत्म-सम्मान आत्मा की प्रवृत्ति है जिससे न्याय पर मर-मिटने की अभिलाषा और दृढ़ होती है । यह साहस की संगिनी भावना है ।

आत्म-सम्मान की सबसे बड़ी प्रतिद्वन्द्विनी लोक-निन्दा है । आत्म-सम्मान इसको सहन नहीं कर पाता । निन्दित होने से पहले वह मर जाना अच्छा मानता है । अतः वह सदा सतर्क रहता है । समाज को उन्नत बनाने का सदा प्रयत्न करता है ।

चरित्र को पावन रखने के लिए हृदय को पवित्र रखना चाहिए । कोई

भी बात मन में छिपानी नहीं चाहिए । ऐसा करने से मन पवित्र नहीं रहता । मन सत्य का मन्दिर है । उसका आचरण पवित्र रहता है । उसके आचरण में हिंसा नहीं रहती । वह अहिंसा का पुजानी बन जाता है । अहिंसा ही शान्ति की पहली सीढ़ी है ।

दृढ़ता चरित्र का प्रधान अंग है। सोच समझ कर सिद्धांत अपनाने चाहिए फिर अपने सिद्धांतों पर दृढ़ रहना चाहिए । किसी की बात सुनकर या किसी के डराने-धमकाने या लालच देने से विचलित नहीं होना चाहिए ।

आज के बालक कल के नागरिक हैं । इसलिए उनके चरित्र का निर्माण समाज और राष्ट्र का पहला कर्त्तव्य है ।

प्रश्नावली :

(क) एक-दो शब्दों में उत्तर लिखिये -

1. मनुष्य के 'स्व' का सम्मान - ..... ।
2. सरदार वल्लभभाई पटेल को किस उपनाम से जाना जाता है ?
3. शांति की पहली सीढ़ी क्या है ?
4. अच्छे चाल-चलन वाले व्यक्ति को क्या कहा जा सकता है ?
5. आत्म-सम्मान का सबसे बड़ा प्रतिद्वन्द्वी कौन है ?

(ख) चरित्र को पावन रखने के लिए क्या-क्या करना चाहिए ?

पाठ बोध :

मनुष्य की असल सम्पति उसका चरित्र ही है ।

अशर्फियाँ

एक गाँव में सोहन और मोहन दो भाई थे । सोहन बहुत ही सीधा-सादा और ईमानदार था । गाँव वाले उसकी ईमानदारी की कसमें खाते थे; जबकि मोहन बहुत चालाक और धूर्त था । वह गाँव वालों से मीठी-मीठी बातें करके उन्हें ठगता था । कभी सामान कम तोलकर तो कभी पैसों की हेरा-फेरी करके वह खूब मुनाफा कमा रहा था । उसके पास धन की कोई कमी नहीं थी । उसके घर में ऐशो-आराम के सभी साधन मौजूद थे ।

एक दिन सोहन दुकान के लिए महीने भर का सामान लाने शहर गया । आते समय रास्ते में उसकी बैलगाड़ी एक भारी पत्थर से टकराकर पलट गई । उसका सारा सामान जमीन पर बिखर गया । रेतीली मिट्टी से जितना सामान वह उठा सका, उसने उठाया और गाड़ी को सीधा करके उसमें रख दिया । वह सोच रहा था कि एक तो वैसे ही मुश्किल से गुजारा होता हैं । आधा सामान मिट्टी में मिल जाने से इस माह पता नहीं कैसे काम चलेगा ? वह बैलगाड़ी में बैठकर कुछ दूर ही गया था कि उस सुनसान रास्ते पर एक चोर भागता हुआ आया और उसी पत्थर से टकराया । उसके हाथ से एक थैली छूट कर दूर जा गिरी । उसके पीछे सैनिक दौड़ रहे थे । चोर जल्दी से सँभला और तेजी से भाग निकला । पीछे-पीछे सैनिक भी खूब फुर्ती से भाग रहे थे । सोहन ने उन्हें आवाज लगाई पर किसी ने उनकी नहीं सुनी । उसने गाड़ी से उतरकर थैली उठाई तो देखता रह गया । थैली सोने की अशर्फियों से भरी थी । शाम हो चुकी थी । वह थैली को उठाकर घर ले आया । उसके मन में उथल-पुथल हो रही थी । लालच का साँप उसके अंदर फन फैलाने लगा। वह सोचने लगा- "क्यों न इस थैली को चुपचाप अपने पास रख लूँ और बड़ी शान-शौकत से रहूँ ।" वह थैली को सिर के पास रख कर सो गया ।

रात में सोते-सोते सोहन अचानक उठ बैठा । वह सोचने लगा- "जब मैने आज तक किसी से एक पैसे की बेईमानी नहीं की, लोग मेरी ईमानदारी की कसमें खाते हैं तो क्या रास्ते में पड़ी ये अशर्फियाँ मेरा ईमान डिगा

देंगी ? नहीं, नहीं इन अशर्फियों पर राजा का हक है । मैं सुबह होते ही इन्हें महल में दे आऊँगा ।" वह सुबह होते ही अशर्फियाँ देने राजा के महल की ओर चल पडा । रास्ते मे उसे मोहन दिखाई दिया । मोहन उसे छेड़ते हुए बोला- "क्यो भाई ! आज दुकान की तरफ ना जाकर कहीं सैर-सपाटे पर जा रहे हो ।" सोहन ने सोचा अगर इसे बता दूँगा तो यह अशर्फियाँ नहीं लौटाने देगा । इसलिए उत्तर दिए बिना ही चुपचाप वहाँ से निकल गया । मोहन को बड़ा आश्चर्य हुआ । सोचा आज तक ऐसा नहीं हुआ जो सोहन ने मेरी बात का जवाब न दिया हो । आज इसे क्या हो गया ? वह भी सोचते हुए अपनी दुकान की ओर चल दिया ।

सोहन सुबह-सुबह ही महल के द्वार पर जा पहुँचा । दरबान ने उससे इतनी सुबह आने का कारण पूछा ।

सोहन ने उसे घटना विस्तार से बताई और कहा- "मैं यह अशर्फियाँ राजा को देने आया हूँ । मुझे अंदर जाने दो ।" यह सुनकर दरबान हँसने लगा और बोला- "मूर्ख ! हाथ आई लक्ष्मी को कोई लौटाता है । तुम्हें लक्ष्मी अच्छी नहीं लगती तो मुझे दे दो और जाओ यहाँ से ।" दरबान ने थैली लेने के लिए हाथ बढ़ाया तो सोहन ने उसे थैली देने से इंकार कर दिया । दोनों में बहस होने लगी । बहस को सुनकर एक मंत्री जो वहाँ से गुजर रहा था उनके पास जा पहुँचा । मंत्री के पूछने पर दरबान ने सारा किस्सा उसे सुनाया । मंत्री भी सुनकर हँसने लगा और बोला जिन अशर्फियों को तुम लौटाने की बात कर रहे हो, उसके लिए चोर को सजा हो चुकी है । इसे हम बाँट लेंगे ।

इससे पहले मंत्री कुछ और बोलता राजा भी सुबह की सैर के लिए टहलते हुए वहाँ पहुँचा । राजा को देखकर मंत्री के होश गुम हो गए । राजा ने सब कुछ जानने के बाद तीनों को दरबार में आने को कहा । तीनों के दरबार में आने पर राजा ने अपना निर्णय सुनाया । राजा ने कहा कि जब मंत्री रास्ते में गिरी हुई अशर्फियों पर अपना ईमान डिगा सकता है तो दुश्मन के ज्यादा लालच देने पर वह बड़ा से बड़ा विश्वासघात भी कर सकता है ।

यह कहने के बाद राजा ने मंत्री को उसके पद से तुंरत हटा दिया और सोहन को उसकी ईमानदारी का पुरस्कार देते हुए उसे मंत्री बना दिया ।

प्रश्नावली :

(क.) किसने कहा -

1. "क्या रास्ते में पड़ी ये अशर्फियाँ मेरा ईमान डिगा देगी ।"
2. "मैं यह अशर्फियाँ राजा को देने आया हूँ । मुझे अंदर जाने दो ।"
3. "मूर्ख ! हाथ आई लक्ष्मी को कोई लौटाता है ? तुम्हें लक्ष्मी अच्छी नहीं लगती तो मुझे दे दो और जाओ यहाँ से ।"

(ख.) रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिये -

1. सोहन बहुत ही सीधा-सादा और ..... था ।
2. चोर के हाथ से एक ..... छूटकर दूर जा गिरी ।
3. ..... का साँप उसके अंदर फन फैलाने लगा ।
4. राजा ने सोहन को ..... बना दिया ।

पाठ बोध :

ईमानदारी ही अमर धन है ।

महात्मा बुद्ध और वृक्ष

एक बार महात्मा बुद्ध अपना उपदेश देकर लौट रहे थे। चलते-चलते उन्हें थकान महसूस होने लगी। सामने आम का बाग देखकर उन्होंने पेड़ों की छाँव में आराम करने की सोची। वे बाग के द्वार पर खड़े हो गए। बाग की रखवाली करने वाले युवक ने उन्हें पहचानते हुए कहा- "आइए भगवन् पधारिए ! क्या सेवा करूँ ? मुझे अपनी सेवा का अवसर देकर कृतार्थ कीजिए।"

महात्मा बुद्ध बोले- "सुखी रहो बालक ! मैं यहाँ केवल थोड़ी देर रूककर अपनी थकान मिटाना चाहता हूँ।"

युवक ने एक घने पेड़ के नीचे की जगह अपने हाथों से साफ करते हुए कहा- "आइए महात्मन् ! यहाँ आराम कीजिए।" महात्मा बुद्ध उस पेड़ की छाँव में लेट गए और थोड़ी देर में उनकी आँख लग गई।

बाग के मालिक ने दो लोगों को रखवाली के लिए रखा था। एक बूढ़ा और एक नवयुवक दोनों बारी-बारी से बाग की रखवाली करते थे। बूढ़े के आ जाने पर युवक ने उसे महात्मा बुद्ध का ध्यान रखने को कहा और वह अपने घर की ओर चल दिया।

बाग के बाहर कुछ बच्चे आम चुराने के लिए आए। युवक को जाते देख एक बच्चा प्रसन्नता से बोला- "वो देखो बला टली। अब आराम से पके-पके आमों पर हाथ साफ करेंगे।"

दूसरा बोला- "पहले इसे कुछ दूर जाने दो, नहीं तो क्या पता यह यहीं से लौट आए और हम सब फँस जाएँ ?"

तभी तीसरा मोटा बच्चा बोला- 'अरे भई ! अब सब्र नहीं होता। आमों की भीनी-भीनी खुशबू मुझे पागल बना रही है। पहला बोला- "सब्र कर दोस्त ! हम भी कहाँ रूकना चाहते हैं।"

चौथा बोला- "अब वह नहीं आएगा। बहुत दूर जा चुका।" यह कहकर वे चारों एक साथ बाग की दीवार पर चढ़ बैठे।

एक बालक ने आम पर निशाना लगाया । निशाना सीधा जाकर आम पर लगा और आमे नीचे गिर गया ।

दूसरा बोला- "बेफकूफ ! यह आम पूरी तरह पका नहीं था । यह देख मैं बिल्कुल पके हुए रसीले आम पर निशाना लगाता हूँ । उसने घने पेड़ पर पके हुए आम पर निशाना लगाया । निशाना आम पर तो नहीं लगा बल्कि पेड़ के नीचे सोए हुए महात्मा पर जा लगा ।" पत्थर लगते ही महात्मा की चीख निकल पड़ी ।

बच्चों को लगा पत्थर बूढ़े रखवाले को जा लगा है । वे सब उसकी मदद करने के लिए दौड़ पड़े । पर वहाँ पर महात्मा को देखकर डर के मारे काँपने लगे और उनसे हाथ जोड़कर कहने लगे- "क्षमा कीजिए महात्मन् ! हमारे कारण आपको असहनीय पीड़ा सहनी पड़ी ।"

महात्मा बुद्ध बोले- "डरो मत बच्चो ! यह सब तुमने जान-बूझकर नहीं किया । बल्कि दुर्घटनावश ऐसा हो गया ।" एक बच्चा बोला- "इतनी महान् आत्मा को कष्ट पहुँचाकर हमसे बड़ा पाप हुआ है ।" महात्मा बुद्ध बोले- "मैं कहाँ महान् हूँ । मुझसे महान् तो यह पेड़ है, जो पत्थर खाकर भी मीठे फल देता है । मुझसे तो डर और आत्मग्लानि के सिवा कुछ नहीं मिला ।"

फिर उन्हें समझाते हुए बोले- "बच्चो ! अनजाने में किया गया अपराध क्षमा के योग्य होता है । फिर तुम सबने ईमानदारी से अपनी गलती मानते हुए क्षमा माँगी । इसलिए क्षमा के हकदार तो तुम स्वयं हो गए । अब तुम बिना किसी संकोच के जाओ और खुश रहो ।"

प्रश्नावली :

(क.) उत्तर लिखिए-

1. महात्मा बुद्ध बगीचे में किस इच्छा से गए ?
1. बच्चे बगीचे में क्यों आए ?

(ख.) रिक्त स्थान की पूर्ति कर महात्मा बुद्ध का कथन पूर्ण कीजिए -

"मैं कहाँ ..... हूँ । मुझसे महान् तो यह ..... है जो पत्थर खाकर भी मीठे ..... देता है । मुझसे तो तुम्हें ..... और ..... के सिवा कुछ नहीं मिला ।"

(ग.) किसने कहा -

1. "आइए महात्मन् ! यहाँ आराम कीजिए ।"
2. 'डरो मत बच्चों ! यह सब तुमने जान-बूझकर नहीं किया । बल्कि दुर्घटनावश हो गया ।'
3. "क्षमा कीजिए महात्मन् ! हमारे कारण आपको असहनीय पीड़ा सहनी पड़ी ।"

पाठ बोध :

अनजाने में हुई गलती के लिए पश्चाताप हो जाए तो उसके लिए क्षमा मिल जाती है ।

शोर-प्रदूषण

आज पर्यावरण-प्रदूषण एक गंभीर समस्या बन गई है । प्रदूषण की बहुआयामी प्रतिक्रियाओं में शोर प्रदूषण भी एक है । यह बात बहुत कम लोग जानते हैं कि शोर प्रदूषण जहरीले रसायन से भी अधिक खतरनाक होता है । आधुनिक जीवन में शोर की मात्रा लगातार बढ़ रही है, जिससे रक्तचाप, बहरापन आदि रोग मनुष्य को पीड़ित कर रहे हैं । औद्योगिक विकास के साथ-साथ शोर की मात्रा दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है । यह चिन्ता का विषय है ।

दैनिक जीवन में साधारण आवाज से अधिक ऊँची आवाजें 'शोर' कहलाती हैं । ध्वनि को मापने का एक मानदण्ड होता है, जिसे 'डेसीबल' कहते हैं । डेसीबल को संक्षेप में डी.बी. कहते हैं । डेसीबल पैमाने पर शून्य का स्तर होता है, जहाँ से आवाज का सुनाई देना आरम्भ होता है । साधारण व्यक्ति की जानकारी के लिए डेसीबल इस तरह मापा जा सकता है -

स्रोत	ध्वनि शक्ति डेसीबल में
सुनने में आम सामान्य आवाज	0
पत्तियों की खड़खड़ाहट	10
दीवार घड़ी की आवाज	20
घर की सामान्य बातचीत	30
गाड़ियों का शोर/सामान्य ट्रेफिक	40-70
व्यस्त कार्यालय	80
भारी उद्योग/ट्रेफिक	90-110
मोटर का हार्न (6मीटर पर)	110
रॉक संगीत/डिस्को	120
मोटर साइकिल बिना साइलेंसर	130
जेट विमान	140
रॉकेट इंजन	180

हमें स्मरण रखना चाहिए कि 80 डेसीबल से अधिक शोर मानव के लिए हानिकारक होता है ।

प्रतिदिन शोर प्रदूषण बढ़ता ही जा रहा है । अगर इसे रोका नहीं गया तो अगले बीस-तीस वर्षों में नगरों तथा महानगरों में बहरों की संख्या ज्यादा हो जाएगी । कुछ ऐसे पेड़-पौधे भी हैं जिनकी उपस्थिति से दस से पन्द्रह डेसीबल शोर कम किया जा सकता है । ये पेड़ हैं- नीम, आम, इमली, नारियल, बिल्व, यूकेलिप्टिस आदि ।

प्रश्नावली :

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिये -

1. ..... की बहुआयामी प्रतिक्रियाओं में शोर प्रदूषण भी एक है ।
2. ध्वनि का मापने का मापदण्ड है - ' ..... '
3. 80 से अधिक शोर मानव के लिए ..... होता है ।
4. कुछ वृक्षों की उपस्थिति से भी दस से पन्द्रह डेसिबल तक शोर ..... किया जा सकता है ।

पाठ बोध :

हमें अपने स्तर पर शोर-प्रदूषण को कम करने का प्रयास करना चाहिए ।

सपने हुए पूरे

दस वर्ष पहले भारत के कुछ क्षेत्रों में भूंकप आया। 'भुज' औंर 'अर्यर' शहर सबसे ज्यादा तबाह हुए । हजारों घर मलबों में बदल गए और हजारों की संख्या में लोग मारे गए ।

बारह वर्ष के अनिल ने भूकम्प में अपने माता-पिता को खो दिया । अब उसकी छोटी बहन और उसकी दादी ही बची थी ।

भूकम्प ने उसके सारे सगे-संबंधियों को भी छीन लिया था । इसीलिए अपनी बहन और दादी के साथ उसे सरकार की तरफ से बनाए गए कैंप में ही रहना पड़ रहा था ।

अनिल बहुत ही मेहनती औंर स्वाभिमानी लड़का था । उसने खुद ही कुछ करके कमाने का फैसला किया ।

शुरूआत में तो उसने कार पोंछने, स्टेशन पर सामान ढोने जैसे काम किए । मगर थोड़े रुपए जमा हो जाने के बाद उसने एक छोटे से बक्से के साथ जूते पॉलिश करने वाली कुछ चीजें जैसे- पॉलिश, ब्रश आदि भी खरीदीं।

वह रोज सुबह बक्सा लेकर कैंप से बाहर निकल जाता और अपना ज्यादातर समय थियेटर, सिनेमा हॉल, थाने, कोर्ट, पाँच सितारा होटल या मॉल्स के बाहर बिताता । क्योंकि उसे पता था कि इन जगहों पर उसका कारोबार अच्छा चलेगा ।

एक शाम काम करते-करते थक जाने के बाद वह एक होटल के बाहर बैठ गया । उसकी दोनों बाँहों में दर्द हो रहा था ।

वह अपना सामान समेटकर चलने को ही था कि होटल के सामने एक बड़ी कार आकर रुकी औंर सुंदर कपड़े पहने एक भद्र पुरूष गाड़ी से नीचे उतरा ।

वह व्यक्ति जरा जल्दी में था इसलिए अनिल के पास आते ही उसने कहा- "मेरे जूतों पर फटाफट पॉलिश कर दो । मुझे पार्टी में जाना है ।"

अनिल ने झटपट अपना काम शुरू कर दिया और देखते ही देखते उस अजनबी के जूते हीरे जैसे चमका दिए । अपने जूतों की चमक देखकर वह आदमी मुस्कुराने लगा । उसने अपनी जेब से पचास रुपए का नोट निकाला और अनिल को देने लगा । अनिल ने कहा- "साहब ! मेरे पास खुले पैसे नहीं है ।"

इस पर उसने कहा- "ठीक है ! बाकी रकम कड़ी मेहनत के इनाम के रूप में रख लो ।"

अनिल ने उस आदमी को धन्यवाद कहा, और पचास का नोट बक्से में डाल दिया । वह आदमी तेजी से होटल की तरफ चला गया और आँखों से ओझल हो गया ।

अनिल थका हुआ था ही उसकी बाँहों में अभी भी बहुत दर्द हो रहा था । घर जाने के लिए वह अपना सारा सामान समेटने लगा । तभी उस बक्से की बगल में एक चमड़े का काला बटुआ पड़ा मिला । उस पतले से बटुए को खोलते ही वह हैरान रह गया । उसके अंदर हजार रुपए वाले नए-नए बहुत सारे नोट थे । इतने सारे रुपए देखकर उसकी आँखें चौंधिया गईं । उसने सोचा, लगता है अब मेरे बुरे दिन खत्म होने वाले हैं ।

फिर क्या था, उसने अपना सामान समेटा और घर चला आया ।

उसके घर आते ही उसकी दादी ने पूछा- "बेटे अनिल ! क्या बात है, तुम जल्दी लौट आए ?"

अनिल ने जवाब दिया- "कुछ नहीं दादी माँ ! आज मेरे सिर में दर्द होने लगा था, मैंने सोचा क्यों न घर जाकर थोड़ा आराम कर लूँ ।" यह कहते हुए बिस्तर पर लेट गया, मगर उसका मन तो रुपयों में उलझा हुआ था । वह सोचने लगा- "इन रुपयों से पहले मैं अंकिता के लिए एक नई गुड़िया और दादी माँ के लिए एक कंबल खरीदूँगा, सर्दी का मौसम आने ही वाला है ।" उन रुपयों को लेकर वह तरह-तरह के ताने-बाने बुनने लगा ।

यही सब सोचते-सोचते वह गहरी नींद में सो गया । उसने सपने में

अपने मम्मी-पापा को देखा जो उसे कह रह थे- "बेटे ! हमें तुमसे ऐसी उम्मीद नहीं थी । बटुए वाले रुपए तुम्हारे नहीं हैं । तुम्हें उन रुपयों को खर्च करने का अधिकार नहीं है ।" .... इसलिए अनिल ने नींद खुलते ही अपने मम्मी-पापा को ढूँढ़ा, मगर उसके आस-पास कोई नहीं था । उसे अपनी गलती का एहसास हो गया । उसने मन ही मन निश्चय किया; कुछ भी हो वह बेईमानी नहीं करेगा और उस आदमी का पता लगाएगा, जिसका वह बटुआ है ।

बटुआ वापस लौटाने का संकल्प करके उसने बटुए के अंदर सारी चीजें ठीक से देखीं कि शायद बटुए वाले का कुछ अता-पता चल सके । तभी बटुए में एक पेन कार्ड मिला, जिस पर पता लिखा हुआ था । फिर क्या था, सुबह का नाश्ता करने के बाद उसने अपना बक्सा ठीक-ठाक किया, अपनी छोटी बहन को गले लगाया और दादी माँ से विदा लेकर कैंप से बाहर चल पड़ा ।

उसने उस आदमी का नाम व पता पढ़ा । बटुए का मालिक राज सक्सेना था । राज सक्सेना बहुत धनी व्यक्ति था और शहर में उसके नाम से अधिकांश लोग परिचित थे । इसलिए अनिल को उसका घर खोजने में कोई परेशानी नहीं हुई ।

उसके दरवाजे पर दो गार्ड खड़े थे । एक ने कहा- "अरे, अरे ! कहाँ जा रहे हो ? तुमने सोचा भी है, तुम कौन हो, और यहाँ कैसे आ गए?"

अनिल ने जवाब दिया- "मैं राज सक्सेना साहब से मिलने के लिए आया हूँ । मुझे उनसे एक जरूरी काम है । गार्ड ने पूछा- "जरूरी काम ! क्या जरूरी काम है ?"

उसने कहा- "माफ करना गोपनीय बात है । मैं तुम्हें नहीं बता सकता ।"

राज साहब अपने आहते में बैठ सुबह के नाश्ते का मजा ले रहे थे । उन्होंने गार्ड से पूछा- "क्या बात है, वहाँ पर कौन है ?"

गार्ड ने कहा- "साहब एक लड़का आपसे मिलना चाहता है ।"

राज साहब ने कहा- "उसे आने दो ।"

अनिल ने राज साहब के पास जाकर हाथ जोड़ते हुए कहा- "नमस्ते !" राज साहब ने भी नमस्ते कहते हुए पूछा- "तुम कौन हो और मुझसे क्यों मिलना चाहते हो ?"

उसने जवाब दिया- साहब ! कल 'सनसाइन होटल' के बाहर मैंने आपके जूते पॉलिश किए थे । आपके जाने के बाद मुझे अपने बक्से के पास यह बटुआ मिला । पता नहीं यह मेरे बक्से के पास कैसे आ गया । मैंने बटुए को खोलकर देखा, रुपयों से भरा था । मैं बटुए को लेकर आपके पास आ गया साहब ! गिन लें, मैंने इसमें से एक भी पैसा नहीं निकाला, साहब ! मैं गरीब तो हूँ मगर ईमानदार भी हूँ ।"

अनिल की मासूमियत और ईमानदारी देखकर राज साहब दंग रह गए । उन्होंने अब तक पैसों के लिए हाय-हाय करने वाले घूसखोर अधिकारी, मतलबी दोस्तों और लोभी रिश्तेदारों को देखा था, जो बस कारोबार में बेईमानी और टैक्स चोरी करने की ताक में लगे रहते थे । अपने सामने एक छोटे से बच्चे को ईमानदारी से पेश आते हुए देखकर उन्हें आश्चर्य हो रहा था ।

उन्होंने अनिल से बड़े प्यार से कहा- "बेटे ! बैठ जाओ । अपने बारे

में बताओ ।" अनिल घास पर रखी हुई आराम कुर्सी पर बैठ गया । फिर उसने अपने बारे में सब कुछ बताया ।

राज साहब उसकी बातें सुनकर भावुक हो गए और बोले- "अच्छा बेटे, बोलो तुम ईनाम के तौर पर क्या लेना पंसद करोगे ?"

अनिल को अचानक गरम कंबल व एक सुंदर-सी एक गुड़िया की याद आई । लेकिन उसने कुछ कहा नहीं । उसके चुप रह जाने के बावजूद भी राज साहब को सब कुछ समझ में आ गया ।

उन्होंने मन ही मन सोचा- "मुझे इस ईमानदार बच्चे की मदद करनी चाहिए ।"

उन्होंने कहा- "ठीक है, तुम जाकर अपनी दादी और बहन को यहाँ ले आओ और आज से बाहर वाले कमरे में रहा करो । अब तुम जूते पॉलिश नहीं करोगे । मैं तुम दोनों भाई-बहन का दाखिला स्कूल में करवा देता हूँ । आज से तुम लोगों की देखभाल मैं करूँगा ।" यह सब सुनकर अनिल काफी खुश हुआ और होता भी क्यों नहीं, अब उसके सारे सपने पूरे जो होने वाले थे ।

प्रश्नावली :

(क) उत्तर लिखिये -

1. अनिल ने अपने माता-पिता कैसे खोए ?
2. पैसे कमाने के लिए अनिल ने क्या-क्या काम किए ?
3. अनिल गर्म कंबल और सुंदर गुड़िया किसके लिए खरीदना चाहता था ?

(ख) अनिल के बारे में कुछ वाक्य लिखिए ।

पाठ बोध :

ईमानदारी से किए गए परिश्रम का परिणाम
सदैव अच्छा ही होता है ।

अनोखा वनस्पति जगत्

बच्चो ! आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि जब आप फूल या पत्ते तोड़ने के लिए किसी पौधे की ओर बढ़ते हैं तो पौधे को उसी समय पता चल जाता है । पौधे को यह भी पता चल जाता है कि कौन उसका मित्र है और कौन शत्रु ?

इस क्षेत्र में 'न्यूयार्क कॉलेज' के डगलस डीन और प्रकृति विज्ञान टॉमस ने मनोविज्ञान के विशेषज्ञ डॉ. ऐसर के साथ मिलकर कई तरह के प्रयोग किए । इन प्रयोगों से यह मालूम हुआ कि पौधे पालतू पशु की तरह संवेदनशील होते हैं ।

डॉ बैक्सटर ने सन् 1966 से अपने यंत्र 'पालीग्राफ' के द्वारा पेड़-पौधों की भावनाओं का अध्ययन प्रारम्भ किया । अपने अनुसंधान के दौरान पेड़-पौधों की विचित्र बातें सामने आयीं । उनमें सबसे मुख्य बात यह थी कि पौधा अपने मित्र और शत्रु को पहचान लेता है ।

बच्चों ! इस संसार में कई ऐसी चीजें हैं । जिन्हें देखकर दाँतों तले उँगली दबानी पड़ती है । संसार के घने जंगलों में कुछ ऐसे वृक्ष पाये जाते हैं, जो दूध देते हैं, जल बरसाते हैं, रोटियाँ देते हैं । दूध देने वाला वृक्ष दक्षिण अमेरिका महाद्वीप के ब्राजिल और पेरू देश के घने जंगलों में पाया जाता है ।

इसके तने में छेद करने से दूध निकलता है । यह दूध गाय के दूध के समान मीठा एवं पौष्टिक होता है ।

जल बरसाने वाला वृक्ष इण्डोनेशिया के सुमात्रा द्वीप और दक्षिण अमेरिका के पेरू और चिली देश में पाया जाता है। दोपहर के समय जब सूर्य की किरणें काफी तेज होती हैं। तब यह वृक्ष हवा के द्वारा वाष्प ग्रहण करता है। कुछ देर बाद यही भाप जल के रूप में बरसने लगती है। इस वृक्ष की ऊँचाई 50 फीट होती है।

इसी प्रकार का वृक्ष अफ्रीका में पाया जाता है। जिसके तने में छेद कर देने से ठंडा जल निकलता है।

रोटी देने वाला वृक्ष पूर्वी अफ्रीका और ब्राजील के जंगलों में पाया जाता है। इस पेड़ की छाल से रोटी बनाई जाती है। जो बहुत ही स्वादिष्ट होती है। दिशा बताने वाला वृक्ष आस्ट्रेलिया और दक्षिणी गोलार्द्ध के कुछ इलाकों में होता है। इसकी पत्तियाँ सदा उत्तर और दक्षिण की ओर ही रहती हैं। इससे वहाँ के आदिवासियों को दिशा का ज्ञान होता है।

संयुक्त राज्य अमेरिका के कैलिफोर्निया में 'डगलस फर' नामक विशाल वृक्ष पाये जाते हैं। यदि इस एक वृक्ष के तने को खोखला कर दिया जाए तो लगभग 150 बच्चे आसानी से बैठ सकते हैं। सड़क बनाते समय वृक्ष बीच में आ जाता है तो इसे गिराया या उखाड़ा नहीं जाता। इसके तने के बीच को खोखला कर सड़क बना ली जाती है। अफ्रीका के घने जंगलों में 15 से 20 फीट की ऊँचाई वाले ऐसे वृक्ष पाये जाते हैं, जो बच्चे की तरह किलकारी मारकर हँसते हैं। इसके विपरीत संयुक्त राज्य अमेरिका में दिन में रोने वाला वृक्ष पाया जाता है। इसका पता 'एडीसन' नामक व्यक्ति ने लगाया। सूडान में रोने वाला वृक्ष पाया जाता है। ऐसा लगता है कि कुत्ते और बिल्ली रो रहे हों।

इसी प्रकार ब्राजील में 'मार्नर' प्लान्ट कहलाने वाला वृक्ष दिन में बच्चों की आवाज में रोता है।

बच्चों ! कुछ पौधे ऐसे भी होते हैं जो जहरीले कीड़े खाते हैं। वायु में फैले कई भयानक रोगों को दूर करते हैं। ये पौधे कश्मीर, नैनीताल,

दार्जिलिंग, और असम के उन स्थलों पर पाए जाते हैं, जहाँ नाइट्रोजन की कमी रहती है । जब कोई कीट-पतंगा इनके पास आता है तो ये उनको खाकर नाइट्रोजन की कमी को पूरा कर लेता है । इन पौधों की 440 जातियाँ पायी जाती है । जिनमें कुछ के नाम इस प्रकार हैं - ब्लैडर बर्ट, तुम्बीलता, डायोनिया, वीनस प्लाई, सुराही के आकार के नर्पेथीस एवं सरसौनिया और मक्खी इत्यादि । ये हमारे स्वास्थ्य की रक्षा करते हैं । इस तरह ये हमारे मित्र हैं ।

प्रश्नावली :

(क) सही शब्द का चयन कर वाक्य पूर्ति कीजिये -

1. ..... देने वाला वृक्ष दक्षिण अमेरिका महाद्वीप के ब्राजिल और पेरू देश के घने जंगलों में पाया जाता है । (कॉफी/दूध)
2. सूडान में ..... वाला वृक्ष पाया जाता है । (रोने/हंसने)
3. कुछ पौधे ऐसे भी होते हैं जो ..... कीड़े खाते हैं और वायु में फैले कई भयानक रोगों को दूर करते हैं । (रसीले/जहरीले)
4. ब्राजील में 'मार्नर' प्लान्ट कहलाने वाला वृक्ष ..... में बच्चों की आवाज में रोता है । (रात/दिन)
5. ..... बताने वाला वृक्ष आस्ट्रेलिया और दक्षिणी गोलार्द्ध के कुछ इलाको में होता है । (दिशा/दशा)

(ख) टिप्पणी लिखिए -

'डगलस फर'

जल बरसाने वाला वृक्ष !

पाठ बोध :

इस सृष्टि में पेड़-पौधों का भी उतना ही महत्व है,
जितना जीव-जंतुओं का ।

राजा दिलीप का सेवा भाव

बहुत समय पहले अयोध्या में राजा दिलीप राज्य करते थे । उनकी पत्नी का नाम सुदक्षिणा था । दुर्भाग्यवश उनकी कोई संतान न थी । संतान की इच्छा से राजा दिलीप अपनी पत्नी के साथ जंगल में गुरू वशिष्ठ के आश्रम में गए । गुरू वशिष्ठ ने राजा की इच्छा जानकर अपने आश्रम की गाय नंदिनी का सेवा भार उन्हें सौंप दिया ।

रानी सुदक्षिणा प्रातः उठते ही नंदिनी की आरती उतारती । फिर उसे पति की देखभाल में जंगल में चरने के लिए विदा करती । राजा दिन भर छाया की भाँति उसके पीछे चलते । उसकी भूख-प्यास का ध्यान रखते हुए उसकी रक्षा करते । शाम को जैसे ही आश्रम में आते तो नंदिनी का बछड़ा माँ नंदिनी से चिपककर दूध पीना आरंभ कर देता । सुदक्षिणा नंदिनी की प्रदक्षिणा कर धूप-दीप थाली में लेकर उसकी पूजा करती । रात को फिर नंदिनी को हरी-हरी घास खिलाकर उसकी सेवा करते । इस प्रकार गाय की सेवा करते हुए इक्कीस दिन बीत गए ।

एक दिन वन में गाय के पीछे चलते हुए राजा दिलीप का ध्यान जंगल की सुंदरता में लग गया । उन्होंने नंदिनी के भय से रंभाने की आवाज सुनी । वह एक भयंकर सिंह के पंजे में फँसी छटपटा रही थी । राजा दिलीप

ने धनुष बाण चढ़ाकर सिंह को मारना चाहा । ईश्वर की माया से उनका हाथ पत्थर-सा हो गया । राजा दिलीप भयभीत नंदिनी को देखकर बेचैन हो उठे । उन्हें उसके दुधमुँहे बछड़े का ध्यान आया । उन्होंने सिंह से प्रार्थना की- "तुम मेरा शरीर खाकर अपनी भूख मिटा लो पर इसे छोड़ दो ।"

सिंह ने राजा की मजाक उड़ाते हुए कहा- "राजन्, तुम नंदिनी जैसी करोड़ों गायें देकर गुरू को प्रसन्न कर सकते हो । इस गाय के लिए तुम अपना बलिदान क्यों कर रहे हो ?" राजा दिलीप ने प्राणों की याचना करते हुए आँसू बहाती नंदिनी को देखा । उन्होंने अपने धनुष बाण फेंक दिए और सिंह के आगे सिर झुकाकर खड़े हो गए । थोड़ी देर जब कुछ आवाज नहीं हुई तो उन्होंने सिर उठाकर देखा । वहाँ कोई सिंह न था । नंदिनी ने मनुष्य की वाणी में कहा- "मैं तुम्हारी परीक्षा ले रही थी मैं सब इच्छाओं को पूरी करने वाली 'कामधेनु' गाय हूँ । तुम्हारी पुत्र प्राप्ति की इच्छा पूरी होगी ।" राजा यह सुनकर नंदिनी के साथ वशिष्ठ ऋषि के आश्रम में आए व सुदक्षिणा को प्रसन्नता से शुभ समाचार दिया ।

नंदिनी के आशीर्वाद से उनका रघु नामक पुत्र हुआ । रघु के वंश में उत्पन्न होने के कारण राम 'रघुवंशी' कहलाए ।

प्रश्नावली :

उत्तर लिखिये -

1. गुरू वशिष्ठ ने राजा को किसकी सेवा का भार सौपा ?
2. रानी का नाम क्या था ?
3. राजा दिलीप ने सिंह से क्या प्रार्थना की ?
4. मैं सब इच्छाओं को पूरी करने वाली 'कामधेनु' गाय हूँ । किसने कहा ?
5. राजा दिलीप के पुत्र का नाम क्या था ?

पाठ बोध :

सच्ची लगन, परिश्रम और सेवा से आदमी सब कुछ प्राप्त कर सकता है ।

मूर्ख के प्रति करुणा

एक बहुत सुन्दर एवं विशाल तालाब था । तालाब के किनारे चारों ओर हरा-भरा बगीचा था । बगीचे में विभिन्न प्रकार के पक्षी रहते थे ।

तालाब में एक हंसों का जोड़ा रहता था । बगीचे के एक पेड़ पर बैठा एक कौआ हंस दम्पति को पानी में अठखेलियाँ करते निहारता रहता था । तालाब में नाना प्रकार के जल पक्षी विचरण करते रहते थे । किसी चीज की जरा-सी आहट पाते ही वे उड़ जाते थे । आसमान में कुछ देर तक चक्कर लगाकर वे फिर अपनी जलक्रीड़ा में मग्न हो जाते । कौआ जब भी देखता हंस दम्पति को पानी में ही पाता । कई दिन बीत गए लेकिन उसने हंस दम्पति को उड़ते हुए कभी नहीं देखा । वह मन ही मन सोचने लगा- सभी जल पक्षी कभी न कभी उड़ते हैं लेकिन ये कैसे जल पक्षी हैं जो कभी नहीं उड़ते ।

एक दिन हंस दम्पति तालाब में तैर रहा था । उन्हें देखकर कौए से रहा न गया । कौआ उड़कर उनके समीप जा पहुँचा और बोला- "तुम देखने में जल-पक्षी से लगते हो । क्या तुम जल-पक्षी नहीं हो ?"

"भाई जल-पक्षी ही समझ लो ।" हंसनी ने मुस्कराते हुए जवाब दिया ।

"तुम हमेशा जल में तैरते हो । क्या तुम्हारे पंख नहीं हैं ?" कौए ने बड़ी उत्सुकता से पूछा ।

"बिना पंख के जल पक्षी कैसा ?" हंस ने कौए के मूर्खतापूर्ण प्रश्न के उत्तर में उससे एक प्रश्न कर दिया ।

"पंख तो होते हैं पर मैंने तुम्हें कभी आज तक उड़ते नहीं देखा," कौए ने शर्मिन्दा होते हुए जवाब दिया ।

"तुमने आज तक हमें उड़ते हुए नहीं देखा ! इसका अर्थ यह तो नहीं है कि हमें उड़ना नहीं आता ।" यह कहकर हंस आकाश की ओर देखते हुए सोचने लगा कि कौआ उन लोगों के जैसा है, जो दूसरों को अपने सामने कुछ नहीं समझता ।

अचानक कौए की दृष्टि तालाब के किनारे मरी मछली पर पड़ी ।

उसने मरी मछली को चोंच में दबाया और उड़कर बाग में जा पहुँचा । एक पेड़ की डाल पर बैठकर मछली को खाने लगा ।

हंस दम्पति कौए को ध्यान से देख रहा था । मरी मछली को खाते देख उनका हृदय घृणा से भर गया ।

उन्होंने अपनी नजरें फेर लीं । वे आपस में कहने लगे- "प्रकृति में अनेकों जीव हैं । सबकी बनावट, रंग-रूप, स्वभाव, रहन-सहन और खान-पान भी भिन्न-भिन्न है । हमें किसी से घृणा नहीं करनी चाहिए ।"

आपस में तरह-तरह की बातें करते हुए हंस दम्पति जल क्रीड़ा में मग्न थे । अचानक कौआ काँव-काँव करते हुए उनके समीप आकर इधर-उधर की बातें करने लगा । वे उसकी बातें कुछ देर तक तो सुनते रहे लेकिन उसकी बेतुकी बातों पर उन्होंने कोई ध्यान नहीं दिया ।

उनका ध्यान आकर्षित करने के लिए कौआ आसमान में तरह-तरह की कलाबाजियाँ दिखाने लगा । कभी पेड़ पर जा बैठता । कभी पेड़ से उड़कर हवा में तरह-तरह के करतब दिखाता । कभी उनके ऊपर से सर्र से गुजरता । उनका ध्यान आकर्षित करने के लिए जोर-जोर से काँव-काँव की आवाज करता । उसकी हरकतों से ऐसा मालूम होता था जैसे वह कह रहा हो कि "जिस प्रकार से मैं हवा में उड़ सकता हूँ, वैसे तुम नहीं उड़ सकते ।" उसकी हर हरकत से मूर्खता ही प्रकट हो रही थी । यदि मूर्ख विनम्र हो तो उसकी मूर्खता सहन की जा सकती है लेकिन यदि वह घमंडी हो तो उसे कोई सहन नहीं कर सकता ।

कौआ वास्तव में मूर्ख और घमंडी था । जहाँ तक उसकी मूर्खता का सवाल था, अपने आपको सबसे अधिक चतुर और बुद्धिमान समझता था । उसकी चतुराई यहीं तक थी कि वह बहुत सावधान और चौकन्ना था और किसी के ऊपर विश्वास नहीं करता था ।

बहुत दिनों से एक ही तालाब में रहते-रहते हंसनी का मन ऊब गया था । एक दिन हंसनी ने हंस से कहा- "चलो टापू पर चलें । वहाँ झील में तरह-तरह के रंग-बिरंगे फूल और कमल भी खिल गए होंगे ।"

"बात तो बहुत अच्छी है । लेकिन चलना है तो अभी चलो । हमारा दोस्त कौआ भी देख लेगा हम सचमुच जल-पक्षी हैं और हम उड़ भी सकते हैं ।" हंस ने पेड़ पर बैठे कौए की तरफ इशारा करते हुए कहा ।

"तो फिर क्या देर है, चलो जल्दी करो ।" यह कहकर हंसनी ने अपने पंख फैलाए और हवाई जहाज की भांति आकाश में उड़ गई । हंस ने भी ऐसा ही किया । वे धीरे-धीरे टापू की ओर बढ़ने लगे ।

कौए ने जब उन्हें जाते हुए देखा तो वह भी तेजी से उड़कर उनकी बगल में जा पहुँचा और बोला- "यह हुई ना बात ! अब मजा आएगा ।" यह कहकर कौआ अपनी गति तेज करके उनसे आगे बढ़ गया । उसको आगे बढ़ते देख हंस ने मुस्कराकर हंसनी की ओर देखा और गति धीमी करने का इशारा किया । जब उन्होंने अपनी गति धीमी कर ली तो कौआ और आगे निकल गया और बोला, "चले आओ, चले आओ, शाबाश ! थोड़ा और तेज चलो ।" कौए की ललकार सुनकर हंस दम्पति ने मुस्कुराकर एक दूसरे की ओर देखा और थोड़ा ऊँचे उठकर अपनी गति बढ़ाई ।

कौए ने जब हंसों की तेज गति देखी तो उसके होश उड़ गए । वह सोचने लगा- अब तो इनके साथ चलना मुश्किल है । उसने उनके पीछे-पीछे उड़ने में ही अपनी भलाई समझी । लगातार उड़ते-उड़ते वह थक गया था । अब उसके पंख जवाब देने लगे थे । वह कभी अपने पंखों को आराम देता तो कभी अपनी चोंच खोलकर अपने फेफड़ों में जोर-जोर से हवा भरता । वह अपनी बची-खुची शक्ति बटोरकर आगे बढ़ने का प्रयास करने लगा । थकान के मारे उसकी साँस फूलने लगी और उसकी आँखों के सामने अंधेरा छाने लगा । कौए को पिछड़ता देखकर हंसों को आभास हो गया कि वह काफी थक चुका है । हंसों ने अपनी गति धीमी करके कौए को अपने बराबर आने का अवसर दिया । उसकी दुर्दशा देखकर हंसनी को हंसी आ गई पर हंस को कौए की हालात पर तरस आ गया । उसने सोचा यह अपनी मूर्खता के कारण मारा जाएगा । अब यह ना तो हमारे साथ टापू पर पहुँच सकता है, न वापस किनारे पर जा सकता है । अब इसका सारा घमंड

कौए के ऊपर दया-भाव दिखाते हुए हंस ने कहा- "देखो भई, यदि तुम थक गए हो और उड़ना मुश्किल है तो मेरी गर्दन पर सावधानी से बैठ जाओ । शेखी में कुछ नहीं रखा है । अनायास ही मारे जाओगे । हम तुम्हें झील के किनारे छोड़ आएँगे ।" मरता क्या न करता, कौए ने हंस की बात मान लेने में ही अपनी भलाई समझी । उसकी आँखों पर पड़ा पर्दा हट गया और उसका घमंड चूर-चूर हो गया । वह हार मानकर सावधानी से हंस की गर्दन पर बैठ गया । और झील के किनारे पहुँच गया । अब उसे अपने किए पर बहुत पछतावा हो रहा था । वह मन में सोचने लगा- मुझ घमंडी पर भी हंसों ने दया-भाव रखकर मुझे नया जीवन दिया है ।

प्रश्नावली :

(क) किसने कहा-

1. "भाई जल पक्षी ही समझ लो ।"
2. "तुम हमेशा जल में तैरते हो । क्या तुम्हारे पंख नहीं हैं ?"
3. "चले आओ, चले आओ, शाबाश ! थोड़ा और तेज चलो ।"
4. "बिना पंख के जल पक्षी कैसा ?"

(ख.) कौए के बारे में कुछ वाक्य लिखिए ।

पाठ बोध : घमण्डी का सिर नीचा ।

जानवरों से सीखें : जीवन की सीख

दोस्तो ! हममें से अधिकतर लोग जानवरों की महत्ता को कभी नहीं समझ पाते हैं, उन्हें हमेशा हीन दृष्टि से देखते हैं । जानवरों की महत्ता को आसान शब्दों में समझाने के लिए एक बेहतरीन कहानी प्रसारित कर रहा हूं ।

आसमान में बादल छाए होने के कारण उस समय काफी अंधेरा था । हालांकि घड़ी में अभी साढ़े चार ही बजे थे । इसके बावजूद लग रहा था जैसे शाम के सात बज रहे हों । लेकिन सलिल पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा, वह अपने हाथ में गुलेल लिए सावधानी पूर्वक आगे की ओर बढ़ रहा था । उसे तलाश थी किसी मासूम जीव की, जिसे वह अपना निशाना बना सके । नन्हें जीवों पर अपनी गुलेल का निशाना लगाकर सलिल को बड़ा मजा आता । जब वह जीव गुलेल की चोट से बिलबिला उठता तो सलिल की प्रसन्नता की कोई सीमा न रहती । वह खुशी के कारण नाच उठता ।

अचानक सलिल को लगा कि उसके पीछे कोई चल रहा है उसने धीरे से मुड़ कर देखा । देखते ही उसके पैरों के नीचे की जमीन निकल गयी और वह एकदम से चिल्ला पड़ा । सलिल का शरीर भय से काँप उठा । उसने चाहा कि वह वहाँ से भागे लेकिन पैरों ने उसका साथ छोड़ दिया । देखते ही देखते दोनों चिम्पैंजी उसके पास आ गये । उन्होंने सलिल को पकड़ा और वापस उसी रास्ते पर चल पड़े जिधर से वे आये थे ।

कुछ ही पलों में सलिल ने अपने आपको एक बड़े से चबूतरे के सामने पाया । चबूतरे पर जंगल का राजा सिंह विराजमान था और उसके सामने जंगल के तमाम जानवर लाइन से बैठे हुए थे । सलिल को जमीन पर पटकते हुए एक चिम्पैंजी ने राजा को सम्बोधित कर कहा- "स्वामी ! यही वह दुष्ट बालक है, जो जीवों को अपनी गुलेल से सताता है ।"

शेर ने सलिल को घूर कर देखा और कहा- "क्यों मानव पुत्र ! तुम ऐसा क्यों करते हो ?" सलिल ने बोलना चाहा लेकिन उसकी जबान से कोई शब्द न फूटा । वह मन ही मन बड़बड़ाने लगा, "क्योंकि मैं जानवरों से श्रेष्ठ हूँ ।"

"देखा आपने स्वामी ?" इस बार बोलने वाला चीता था, "कितना घमण्ड है इसे अपने मनुष्य होने का । आप कहें तो मैं अभी इसका सारा घमंड निकाल दूं ?" कहते हुए चीता अपने दाहिने पंजे से जमीन, खरोचने लगा ।

सलिल हैरान था कि भला इन लोगों को मेरे मन की बात कैसे पता चल गयी ? लेकिन चीते की बात सुनकर वह कहाँ चुप रहने वाला था । वह पूरी ताकत लगाकर बोल ही पड़ा- "हाँ, तुम सभी जीवों से मनुष्य श्रेष्ठ है, महान् है । और यह प्रकृति का नियम है कि बड़े लोग हमेशा छोटों को अपनी मर्जी से चलाते हैं ।"

तभी आस्ट्रेलियन पक्षी नायजी स्क्रब जिसकी शक्ल कोयल से मिलती-जुलती है, उड़ता हुआ वहाँ आया और सलिल को डपट कर बोला- "बहुत नाज है तुम्हें अपनी आवाज पर क्योंकि अन्य जीव तुम्हारी तरह बोल नहीं सकते । पर इतना जानलो कि सारे संसार में मेरी आवाज का कोई मुकाबला नहीं । दुनियां की किसी भी आवाज की नकल कर सकती हूं मैं । क्या तुम ऐसा कर सकते हो ?" सलिल की गर्दन शर्म से झुक गयी और नायजी स्क्रब अपने स्थान पर जा बैठी ।

सलिल के बगल में स्थित पेड़ की डाल से अपने जाल के सहारे उतरकर एक मकड़ी सलिल के सामने आ गयी और फिर वहाँ से सलिल की शर्ट पर छलांग लगाती हुई बोली- "देखने में मैं छोटी जरूर हूँ पर अपनी लम्बाई से 120 गुना लम्बी छलांग लगा सकती हूँ । क्या तुम मेरा मुकाबला कर सकते हो ? कभी नहीं । तुम्हारे अन्दर यह क्षमता है ही

नहीं । पर घमण्ड जरूर है 120 गुना, क्यों ?" कहते हुए उसने दूसरी ओर छलांग मार दी ।

तभी गुटरगूं करता हुआ एक कबूतर सलिल के कन्धे पर आ बैठा और अपनी गर्दन को हिलाता हुआ बोला- "मेरी याददाश्त से तुम लोहा नहीं ले सकते । दुनियां के किसी भी कोने में मुझे ले जाकर छोड़ दो, मैं वापस अपने स्थान पर आ जाता हूँ ।"

सलिल सोच में पड़ गया और सिर नीचा करके जमीन पर अपना पैर रगड़ने लगा ।

"मैं हूं गरनाई मछली । जल, थल, नभ तीनों जगह पर मेरा राज है ।" ये स्वर थे- पेड़ पर बैठी एक मछली के । "पानी में तैरती हूँ, आसमान में उड़ती हूँ और जमीन पर भी चलती हूँ । अच्छा मुझसे मुकाबला करोगे ?"

ठीक उसी क्षण सलिल के कपड़ों से निकल कर एक खटमल सामने आ गया और धीमे स्वर में बोला- "सहनशक्ति में मनुष्य मुझसे बहुत पीछे है । यदि एक साल भी मुझे भोजन न मिले तो हवा के सहारे जीवित रह सकता हूँ । तुम्हारी तरह नहीं कि एक वक्त का खाना न मिले तो आसमान सिर उठा लो ।"

खटमल के चुप होते ही एल्सेशियन नस्ल का कुत्ता सामने आ पहुँचा । वह भौंकते हुए बोला- "स्वामी-भक्ति में मनुष्य मुझसे बहुत पीछे है पर इतना और जान लो कि मेरी घ्राण शक्ति सूंघने की क्षमता भी तुमसे दस लाख गुना बेहतर है ।"

पत्ता खटकने की आवाज सुनकर सलिल चौका और उसने पलटकर पीछे देखा । वहाँ पर बार्न आउल प्रजाति का एक उल्लू बैठा हुआ था । वह घूर कर बोला- "इस तरह मत देखो घमण्डी लड़के ! मेरी नजर तुमसे सौ गुना तेज होती है समझे ?"

सलिल अब तक जिन्हें हेय और तुच्छ समझ रहा था, आज उन्हीं के आगे अपमानित हो रहा था । अन्य जीवों की खूबियों के आगे वह स्वयं को तुच्छ अनुभव करने लगा था । इससे पहले कि वह कुछ कहता या करता, दौड़ता हुआ एक गिरगिट वहाँ आ पहुँचा तथा अपनी गर्दन उठाते हुए बोला- "रंग बदलने की मेरी विशेषता तो तुमने पढ़ी ही होगी, पर इतना और जानलो कि मैं अपनी आँखों से एक ही समय में अलग-अलग दिशाओं में एक साथ देख सकता हूँ; मगर तुम ऐसा नहीं कर सकते । कभी नहीं कर सकते ।"

दोनों चिम्पैंजियों के बीच खड़ा सलिल चुपचाप सब कुछ सुनता रहा । भला वह जवाब देता भी तो क्या ? उसमें कोई ऐसी खूबी थी भी तो नहीं, जिसे वह बयान करता । वह तो सिर्फ दूसरों को सताने में ही अभी तक आगे रहा था । तभी चीते की आवाज सुनकर सलिल चौंका । वह कह रहा था- "खबरदार ! भागने की कोशिश मत करना । क्योंकि 112 किलोमीटर प्रति घण्टे की रफ्तार है मेरी.. और तुम मुझ से पार पाने के बारे में सपने भी नहीं सोच सकोगे .. क्योंकि तुम्हारी यह औकात ही नहीं है ।"

"क्यों नहीं है औकात ?" चीते की बात सुनकर सलिल अपना आपा खो बैठा और जोर से बोला- "मैं तुम सबसे श्रेष्ठ हूं क्योंकि मेरे पास अक्ल है .. और वह तुममें से किसी के भी पास नहीं है ।"

सलिल की बात सुनकर सामने के पेड़ की डाल से लटक रहा चमगादड़ बड़बड़ाया- "बड़ा घमण्ड है तुझे अपनी अक्ल पर नकलची मनुष्य ! तूने हमेशा हम जीवों की विशेषताओं की नकल करने की कोशिश की है । जब तुम्हें मालूम हुआ कि मैं एक विशेष की प्रकार की अल्ट्रा साउंड तरंगें छोड़ता हूँ जो सामने पड़ने वाली किसी भी चीज से टकरा कर वापस मेरे पास लौट आती हैं, जिससे मुझे दिशा का ज्ञान होता है, तो मेरी

इस विशेषता का चुराकर तुमने रडार बना लिया और अपने आपको बड़ा बुद्धिमान कहने लगे ?

"बहुत तेज है अक्ल तुम्हारी ?" इस बार मकड़ी गुर्रायी, "ऐसी बात है तो फिर मेरे जाल जितना महीन व मजबूत तार बनाकर दिखाओ । नहीं बना सकते तुम इतना महीन और मजबूत तार । इस्पात के द्वारा बनाया गया इतना ही महीन तार मेरे जाल से कमजोर होगा । और तुम्हारे सामान्य ज्ञान में वृद्धि के लिये एक बात और बता दूं कि यदि मेरा एक पौंड वजन का जाल लिया जाए तो उसे पूरी पृथ्वी के चारों ओर सात बार लपेटा जा सकता है ।"

इतने में एक भँवरा भी वहाँ आ पहुँचा और भनभनाते हुए बोला- "वाह री तुम्हारी अक्ल ? जो वायु गति के नियम तुमने बनाये हैं, उनके अनुसार मेरा शरीर उड़ान भरने के लिये फिट नहीं है । लेकिन इसके बावजूद मैं बड़ी शान से उड़ता फिरता हूँ । अब भला सोचो कि कितनी महान् है तुम्हारी अक्ल, जो मुझ नन्हें से जीव के उड़ने की परिभाषा भी न कर सकी ।"

हँसता हुआ भँवरा पुनः अपनी डाल पर जा बैठा । एक पल के लिये वहाँ सन्नाटा छा गया । सन्नाटे को तोड़ते हुए शेर ने बात आगे बढ़ाई अब तो तुम्हें पता हो गया होगा नादान मनुष्य ! कि तुम इन जीवों से कितने महान् हो ? अब जरा अपनी घमण्ड की चिमनी से उतरने की कोशिश करो और हमेशा इस बात का ध्यान रखना कि सभी जीवों में कुछ न कुछ मौलिक विशेषताएं पाई जाती है । सभी जीव आपस में बराबर होते है । न कोई किसी से छोटा होता है, न कोई किसी से बड़ा । समझे ?"

"लेकिन इसके बाद भी यदि तुम्हारा स्वभाव नहीं बदला और तुम जीव-जन्तुओं को सताते रहे तो तुम्हें इसकी कठोर से कठोर सजा मिलेगी ।" कहते हुए हाथी ने सलिल को अपनी सूंड में लपेटा और जोर से ऊपर की ओर उछाल दिया ।

सलिल ने डरकर अपनी आँखें बन्द करली; लेकिन जब उसने दोबारा अपनी आँखें खोली तो न तो वहाँ जंगल था और न ही वे जानवर । वह अपने बिस्तर पर लेटा हुआ था । ...

इसका मतलब है कि मैं सपना देख रहा था । सलिल मन ही मन बड़बड़ाया । उसने अपनी पलकों को बन्द कर लिया और करवट बदल ली । हाथी की कही हुई बातें अब भी उसके कानों में गूंज रही थीं ।

प्रश्नावली :

(क) निम्नांकित विशेषताएं रखने वाले जीवों के नाम बताइये -

1. जल-थल-नभ पर राज करने वाली -
2. अधिक अच्छी यादाश्त रखने वाला -
3. स्वामी-भक्ति में किसका मुकाबला नहीं -
4. अलग-अलग दिशाओं में एक साथ देखने वाला -

(ख) उत्तर लिखिए -

1. चिम्पैजी सलिल को पकड़कर जंगल में क्यों ले गए ?
2. चमगादड़ ने अपनी विशेषताएं क्या-क्या बताईं ?
3. सलिल ने अंत में किस जानवर को और क्या करते हुए देखा ?

(ग) 'जानवरों से सीख' विषय पर लघु निबंध लिखिए ।

पाठ बोध :

मनुष्य श्रेष्ठ प्राणी तभी तक है
जब तक वह अपनी बुद्धि का प्रयोग
सकारात्मक/सद्कार्यों में करता है ।

पेड़-पौधे और फूल

स्वप्न और निशा के पिता अजय दत्ता का दिल्ली स्थानांतरण हुआ। दिल्ली में उन्हें रहने के लिए चौथी मंजिल का फ्लैट मिला। अभी तक उनका जहाँ-जहाँ स्थानांतरण होता था, उन्हें नीचे का मकान ही मिलता था। स्वप्न, निशा और उनके मम्मी-पापा का पेड़-पौधों से बहुत प्यार और लगाव था। वे जहाँ रहते घर के आगे लॉन होता था। वे फूलों के पौधे, सब्जियाँ आदि लगाते थे। खुले लॉन में हरी-हरी घास पर चलना बहुत अच्छा लगता था।

वे अपने साथ फूलों के कई गमले लाए थे। उन्होंने छत पर गमले रख दिए। धूप से रक्षा करने के लिए उन पर बाँसों की छत-सी डाल दी। कुछ हरियाली देने वाले पौधों के गमले सीढ़ियों में रख दिए।

निचली मंजिल पर बाली परिवार रहता था। रूपेश बाली व्यापारी थे। उनकी पत्नी राधिका अध्यापिका थीं।

उन दोनों को भी फूलों और पौधों से लगाव था। उनकी पुत्री श्वेता और पुत्र नीलेश की इनमें कोई रूचि नहीं थी। वे इसे बेकार का काम समझते थे।

दोनों परिवारों में शीघ्र मित्रता हो गई क्योंकि स्वप्न, निशा, श्वेता और निलेश एक ही स्कूल में पढ़ते थे।

रविवार के दिन अजय दत्ता ने रूपेश बाली को सपरिवार शाम को चाय पर आमंत्रित किया।

सीढ़ियों पर सजे गमले में लगे हरे-भरे पौधों को देखकर श्वेता और नीलेश दंग रह गए। सीढ़ियों का रूप ही बदल गया था।

'अंकल! आपने सीढ़ियों में गमले रखकर इन्हें सजा दिया है।'

'यह तो स्वप्न और निशा का सुझाव था।' श्रीमती सुमीता दत्ता ने कहा। चाय आदि के साथ बात पेड़-पौधे, फल-फूलों और सब्जियों पर चल पड़ी।

"हमारे दोनों बच्चों की इस ओर रूचि ही नहीं है । हम दोनों भिन्न-भिन्न किस्मों के, ऋतुओं के अनुसार फूल लगाते रहते हैं । ये दोनों गमले में पानी तक नहीं देते ।" - रूपेश बाली ने कहा ।

'हम लोग हमेशा नीचे वाले घरों में रहते आए हैं । दिल्ली में मकानों की समस्या है । यहाँ तो फ्लैट ही फ्लैट हैं । हम लोग छोटे नगरों में रहते रहे हैं । वहाँ खुले घर होते थे । हमारा सारा परिवार पेड़-पौधों, साग-सब्जियों को लगाने और उनकी देखभाल में लगा रहता था ।' अजय दत्ता ने कहा ।

चाय और शीतल पेय पिए जा चुके थे । निशा और स्वप्न, श्वेता और निलेश को छत पर ले गए । सुंदर खिले फूलों को देखकर श्वेता और निलेश दंग रह गए ।

'आप लोगों ने तो छत को बहुत ही सुंदर बना दिया है ।' श्वेता ने आश्चर्य से कहा ।

'इन गमलों पर यह झोंपड़ी-सी क्या बना दी है ?' नीलेश ने पूछा ।

'फूलों के पौधे बहुत कोमल होते हैं । तेज धूप में यह मुरझाकर मर जाते हैं । धूप से बचाने के लिए इन पर बाँस और घास-फूस की छत डाल दी है । कुछ पौधों पर तेज धूप का प्रभाव नहीं पड़ता । उन्हें बाहर खुले में रख दिया है । स्वप्न ने कहा । इतने में अजय दत्ता और रूपेश बाली भी छत पर आ गए । रूपेश बाली ने भी फूलों को देखकर प्रसन्नता प्रकट की ।

"अंकल ! इन पौधों के रख-रखाव के लिए आपको बहुत ध्यान देना पड़ता होगा ?" - श्वेता ने पूछा ।

"पौधों को सुबह-शाम पानी देना पड़ता है । इन्हें खाद भी देनी पड़ती है । कीड़ों से रक्षा के लिए इन पर कभी-कभी दवा का छिड़काव भी करना पड़ता है । पेड़-पौधे मनुष्य की तरह होते हैं । इन्हें भी भोजन की आवश्यकता होती है । इन्हें भी बीमारियाँ लग सकती हैं ।" - अजय दत्ता ने कहा ।

"वाह भाई साहब ! आपने तो फ्लैट की छत को ही बगीचा बना दिया ।" रूपेश बाली ने कहा ।

'बड़े-बड़े नगरों में अब खुले मकान तो रहे नहीं । फ्लैटों की खुली छतों का ही सदुयोपग करना चाहिए । हरे पौधों से वातावरण ठंडा रहता है । फूलों के पौधों से सुंदरता भी बनी रहती है । गमलों में सब्जियाँ उगाकर ताजी मनचाही सब्जियाँ खाने को मिल जाती है ।" - अजय दत्ता ने कहा ।

"पेड़-पौधे तो ताजी हवा बनाने के कारखाने होते हैं । हमारी अध्यापिका भी समझा रही थी, अपने घर के आसपास के खाली स्थानों में पेड़-पौधे लगाने चाहिएँ । इससे वायु-प्रदूषण नहीं होता । मैंने कभी इस ओर ध्यान नहीं दिया । मैं भी खूब गमले लाऊँगी । उनमें तरह-तरह के पौधे लगाऊँगी ।" - श्वेता ने कहा ।

"फ्लैट के पीछे खुली जगह पड़ी है, वहाँ भी पौधे लगा देंगे ।" नीलेश ने कहा ।

"चलो ! तुम दोनों को पेड़-पौधों के महत्व का पता तो चल गया ।" रूपेश बाली ने कहा तो सब हँस पड़े ।

पेड़-पौधे मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त आवश्यक होते हैं । घने जंगलों से वातावरण में शीतलता रहती है । वायु शुद्ध रहती है । ये समय पर वर्षा कराने में सहायक होते हैं । बढ़ते नगरों के कारण पेड़ कटते जा रहे हैं । इसकी पूर्ति का एक ही उपाय है, जहाँ-जहाँ नगर बसें उनमें स्थान-स्थान पर उद्यान बनाएँ जाएँ । इनमें पेड़ लगाए जाएँ । सड़कों के किनारे पेड़ लगाए जाएँ । गली मोहल्लों के खुले स्थानों में पेड़ लगाए जाएँ ।

बहुमंजिले भवनों की छतों और बालकॉनियों में गमलों में पौधे लगाने चाहिएँ । इनसे वायु की शुद्धता बनी रहती है ।

प्रश्नावली :

(क) रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिये -

1. कोमल पौधों को ..... से बचाने के लिए उन पर घास-फूस की छत-सी डाल दी जाती है ।
2. अजय दत्ता को दिल्ली में रहने के लिए मकान ..... मंजिल पर मिला ।
3. सीढ़ियों में सजे ..... देखकर श्वेता और निलेश दंग रह गए ।
4. पेड़-पौधों से वायु ..... होती है, वातावरण में ..... रहती है ।

(ख) 'पेड़-पौधों का महत्व' विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए ।

पाठ बोध :

पेड़-पौधे और मानव एक-दूसरे के पूरक हैं,
एक के बिना दूसरे का अस्तित्व नहीं ।

शिष्य आरुणि

पहाड़ी के नीचे धौम्य ऋषि की कुटिया बनी हुई थी । कुटिया के चारों ओर बड़, पीपल और आम के पेड़ थे । पास ही रंग-बिरंगे फूलों से भरपूर एक बगीचा था । आश्रम के प्रवेश द्वार के पास ही यज्ञशाला थी । वहाँ से उठती हुई भीनी-भीनी सुगन्ध सभी के मन को आनन्दित कर देती थी ।

महर्षि के चरणों में बैठ अनेक ब्रह्मचारियों ने शिक्षा ग्रहण की । उन्हीं के शिष्यों में से एक थे आरुणि । गुरूदेव के मुख से जो भी शब्द निकलता, आरुणि बड़ी श्रद्धा से उसका पालन करता ।

एक दिन सायंकाल के समय मूसलाधार वर्षा हो रही थी । हवा कुछ तेज हो गई थी । बादल गरज रहे थे । बीच-बीच में बिजली भी चमक रही थी । ऐसे में गुरूजी को ध्यान आया कि यदि खेत का बांध टूट गया तो सारा पानी खेत से बाहर बहने लगेगा । उन्होंने आरुणि को बुलाकर कहा, "बेटा आरुणि ! खेत पर जाकर बांध को देख आओ । इतनी बारिश में कहीं से टूट तो नहीं गया ।"

आरुणि गुरू की आज्ञा पालन करने के लिए तुरन्त खेत पर जा पहुँचा । वहाँ जाकर उसने देखा कि बांध एक ओर से टूट गया है । उस रास्ते से खेत का पानी बड़ी तेजी से बाहर निकला जा रहा है ।

उसने कई बार बांध को मिट्टी से भरने की चेष्टा की परन्तु हर बार पानी का बहाव मिट्टी को तोड़कर बाहर निकल जाता । मानों उसके और वर्षा के बीच होड़ लगी हो । पानी था कि रुकने का नाम ही नहीं लेता था । दूसरी ओर आरुणि ने भी बांध बांधने का दृढ़ निश्चय कर लिया था । वह थक कर चूर हो गया । जब किसी प्रकार भी बांध की मरम्मत न हो सकी तो स्वयं टूटे हुए बांध के स्थान पर जा लेटा । पानी का बहना रुक गया ।

आरुणि रात भर उसी तरह बिना हिले-डुले पानी में लेटा रहा । प्रातःकाल सभी ब्रह्मचारी गुरू के चरणों में प्रणाम करने जाते थे । आरुणि को उनमें न देखकर महर्षि बहुत चिन्तित हुए । उन्हें याद आया कि सायंकाल उन्होंने ही उसे खेत का बांध देखने भेजा था । उसी समय अपने शिष्यों को साथ लेकर वे खेत पर पहुँचे । करुण स्वर में पुकारने लगे- आरुणि ! बेटा आरुणि !! तुम कहाँ हो ? जब कहीं से कोई उत्तर न मिला तो गुरूजी व्याकुल होकर खेत में चक्कर काटने लगे । अन्त में उन्होंने देखा कि बेसुध आरुणि टूटे हुए बांध के स्थान पर पड़ा है । ठण्ड से उसका शरीर अकड़ गया है । उसके शरीर पर गीली मिट्टी की तहें जम गई है । बहुत धीरे-धीरे सांस ले रहा है ।

गिरने लगे । वे आरुणि को तुरन्त आश्रम में उठा लाए । अपने हाथों से उसका शरीर धोया-पोछा । उस पर तेल की मालिश करके उसे गरम कपड़े से ढक दिया ।

गुरुजी की देखभाल से थोड़ी देर बाद आरुणि को होश आ गया । गुरुजी बहुत प्रसन्न हुए । आरुणि से बोले- "बेटा ! तुम्हारी गुरू-भक्ति पर मुझे गर्व है । तुम सदा सुखी रहो और खूब नाम कमाओ !"

गुरू के आशीर्वाद से आरुणि अल्प समय में ही बहुत बड़े विद्वान् बन गए ।

प्रश्नावली :

(क) उत्तर लिखिए -

1. महर्षि ने शिष्य आरुणि को तेज बारिश में कहाँ भेजा ?
2. "बेटा ! तुम्हारी गुरू-भक्ति पर मुझे गर्व है । तुम सदा सुखी रहो और खूब नाम कमाओ ।" यह आशीर्वाद किसे मिला ?
3. गुरू की आँखों से टप-टप आँसूं क्यों गिरने लगे ?

(ख) आज के संदर्भ में गुरू-शिष्य की व्याख्या कीजिए ।

पाठ बोध :

गुरू गोविन्द दोउ खड़े, किसके लागूं पाय ।
बलिहारी गुरूदेव की, गोविन्द दियो बताय ।।

आपका मनोरंजन - निर्दोष की पीड़ा

छोटे–छोटे तंग पिंजरों अथवा टोकरियों में किसी पशु पक्षी को बन्द कर उन्हें पीड़ा नहीं पहुँचायें।

कुत्ते ने जान बचाई

अब्राहम लिंकन का नाम इतिहास के पृष्ठों पर स्वर्णिम अक्षरों में लिखा है । उन्हीं के बचपन की एक घटना है- अब्राहम के पिता किसान थे । दिनभर खेतों में जी तोड़ मेहनत करते लेकिन घर के लोगों के लिए केवल खाना जुटा पाते । अन्य सुख-सुविधा का कोई सामान उनके घर में नहीं था । लकड़ी का एक मकान था, जिसमें वे अपने परिवार के साथ रहते थे । गरीब होते हुए भी यह परिवार सदा खुश रहता था ।

अब्राहम को उनके घर वाले प्यार से अबू कह कर पुकारते थे । वे बचपन से ही समझदार, शालीन और मेहनती थे । खेलने में भी बहुत कुशल थे ।

इनकी माँ भी बहुत उदार व समझदार महिला थीं । अबू को बहुत प्यार करती थीं । उन्हें अच्छी-अच्छी कहानियाँ सुनाती । सदा यह शिक्षा देतीं कि हर आदमी को दूसरों के काम आना चाहिए । सभी जीवों पर दया करनी चाहिए ।

एक दिन की बात- अबू अपने पिता के साथ खेत पर काम करवा कर वापस आ रहा था । रास्ते में उसे एक घायल कुत्ता मिला । उस कुत्ते को किसी ने टक्कर मार कर, लहू-लुहान कर दिया था ।

अबू को अपनी माँ की सीख याद हो आई कि सभी जीवों पर दया करनी चाहिए । उसने कुत्ते को उठाया और घर की ओर चल दिया ।

कुत्ता दर्द से कराह रहा था, लेकिन ज्यों ही अबू के प्यार भरे हाथ का स्पर्श पाया, चुप हो गया । अबू ने उसकी चोट पर दवा लगाई । उसे दूध भी पिलाया । प्यार से थपथपाया भी । अपने बिस्तर के पास ही उसे सुलाने लगा ।

तीन-चार दिन में कुत्ता स्वस्थ हो गया । लेकिन अब वह कहीं न जाकर अबू के साथ-साथ पूँछ हिलाता फिरता । चाहे दिन हो या रात वह अबू के साथ साये की तरह लगा रहता था । इस तरह कई साल बीत गये ।

सुहावना मौसम था । एक बार अबू किसी काम से अपने कुत्ते के साथ जंगल की ओर चल दिया । माँ से कह गया कि वह दोपहर तक लौट आएगा ।

दोपहर तो क्या, शाम भी बीत गई । वह नहीं लौटा । घरवाले चिन्तित हो गए । उसके पिता कुछ लोगों के साथ उसे ढूँढ़ने निकले । चारों ओर ढूँढ डाला लेकिन अबू का कहीं पता नहीं चला । वे लोग निराश होकर लौट रहे थे कि तभी उन्हें कुत्ते के भौंकने की आवाज सुनाई दी । अबू के पिता ने तुरन्त पहचान लिया कि वह तो अपने ही कुत्ते की आवाज है ।

वे लोग उसी ओर गए जिधर से कुत्ते की आवाज आ रही थी । वहाँ पहुँचे तो देखा कुत्ता बार-बार एक पत्थर पर अपने पंजे मार रहा है और भौके जा रहा है । पत्थर बहुत बड़ा था । वह पत्थर गुफा के द्वार को ढँके था । सबने मिलकर पत्थर हटाया । देखा- अबू उसके अन्दर बेचैन-सा बैठा है ।

उन्होंने उससे पूछा कि तुम उसमें कैसे बंद हो गए तो अबू ने बताया कि उसने कुछ खरगोश इस गुफा में देखे । इन्हें पकड़ने ज्यों ही अन्दर घुसा कि पता नहीं कैसे यह पत्थर लुढकता हुआ गुफा के मुँह पर आ टिका ।

सबने कहा कि आज तो इस कुत्ते ने अबू के प्राणों की रक्षा की ।

अबू ने अपने प्यारे कुत्ते को उठाकर खूब प्यार किया । एक दिन अबू ने कुत्ते की जान बचाई थी । आज वही कुत्ता अबू की जान बचाकर संसार के एक महान् व्यक्ति का जीवन दाता बन गया ।

प्रश्नावली :

(क) उत्तर लिखिए -

1. अबू की माँ ने क्या सीख दी ?
2. कुत्ता बार-बार पत्थर पर पंजा क्यों मार रहा था ?

(ख.) रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए -

1. अब्राहम को उनके घर वाले प्यार से ..... कह कर पुकारते थे ।
2. अबू को रास्ते में घायल ..... मिला ।
3. एक बड़ा-सा ..... गुफा के मुँह पर आ टिका ।

पाठ बोध :

पशु-पक्षी हमारे साथी हैं,
उनके साथ हमें मित्रतापूर्ण व्यवहार करना चाहिए ।

आपका मनोरंजन - निर्दोष की पीड़ा

कुत्ते अथवा अन्य जानवर को पत्थर से मत मारिये। याद रखें कि प्रत्येक प्राणी में पीड़ा की भावना एक समान होती है।

सोने में जड़ी तस्वीर

आज हम स्वतन्त्र है । लेकिन स्वतन्त्रता पाने के लिए हमें अंग्रेजों से लम्बी लड़ाई लड़नी पड़ी । स्वतन्त्रता की लड़ाई में गांधीजी ने देश को राह दिखाई । स्वतन्त्रता पाने के लिए न जाने कितने लोगों ने अपना सब कुछ दाँव पर लगा दिया । स्वतन्त्रता के इतिहास में नेताजी सुभाषचंद्र बोस का नाम सदा अमर रहेगा । उन्होंने 'आजाद हिन्द फौज' तैयार की । अंग्रेजों के खिलाफ युद्ध की घोषणा कर दी । बर्मा, सिंगापुर, मलाया और दूसरे देशों में रह रहे भारतीय नेताजी को हर तरह से मदद देने को तैयार रहते थे । प्रवासी भारतीय आजाद हिन्द फौज के लिए भरपूर धन जुटाने में लगे रहते थे । सुभाष बाबू के भाषण का जादुई असर लोगों पर पड़ता था । ऐसी ही एक सच्ची घटना इस प्रकार है -

सिंगापुर के हिन्दुस्तानियों में विशेष चहल-पहल दिखाई दे रही थी । आज नेताजी का जन्म-दिन था । सजी-धजी पंजाबी महिलाएं राष्ट्रगीत गाती हुई सभा भवन की ओर जा रही थी । दूसरी ओर गुजराती स्त्रियां पूजा की तैयारी कर रही थीं । मराठा महिलाएं इकतारे बजा रही थीं और देश प्रेम के गीत गाती जा रही थी ।

सभी कह रहे थे - "नेताजी चिरंजीवी हो ! हमारी मातृभूमि आजाद हो !" सवेरे ही सेना ने शानदार परेड की । उसके बाद आजाद हिन्द फौज के जवानों ने अपनी स्त्रियों को बताया कि आज नेताजी को सोने से तौला जाएगा । जो धन इकट्ठा होगा, वह आजाद हिन्द फौज के काम आएगा ।

तिरंगे फूलों से सजी तराजू के एक पलड़े पर नेताजी को बिठाया गया । मलाया के बंगाली डॉक्टर परिवार के लोगों ने शंख बजाए । एक गुजराती महिला आगे बढ़ी । उसने जीवन भर की कमाई सोने की पांच ईंटें तराजू पर धर दी ।

अब तो इस पलड़े में सोने चाँदी, हीरे-मोती चढ़ाए जाने लगे । हर ओर से महिलाएं चली आ रही थी । दस बारह वर्ष की किशोरियां,

युवतियां, लड़कियां, प्रौढ़ महिलाएं, स्त्रियां गहने लिए आ रही थीं । कोई रुमाल में बांधे थी, तो कोई किसी पिटारी में लिए हुए थी ।

वे आतीं और तराजू में उन्हें चढ़ा देती । फिर नेताजी को हाथ जोड़ती । अजब त्यौहार था, अनोखा दृश्य था । शंख बज रहे थे । वहाँ खड़े युवक और सिपाही 'जय हिन्द' तथा 'इंकलाब जिन्दाबाद' के नारे लगा रहे थे । लोगों ने देखा कि पलड़ा भर गया है पर वजन पूरा नहीं हुआ । एक सैनिक ने कहा- "अभी और सोना चाहिए ।"

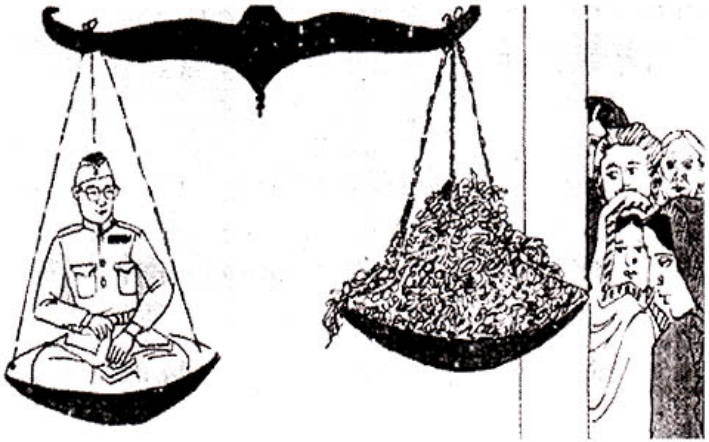

बस फिर क्या था, आस-पास खड़ी महिलाएं अपने कानों के बुंदे, गले की मालाएं और अंगूठियां उतार-उतार कर पलड़े पर रखने लगी । एक महिला ने अपनी सोने की घड़ी उतार कर पलड़े में चढ़ा दी । पर वजन अब भी बराबर नहीं हुआ था ।

तभी किसी महिला की सिसकियों की आवाज सुनाई दी । सब चौक उठे, कमाण्डर लक्ष्मीबाई एक महिला को सहारा देती हुई, अपने साथ लेकर आई । महिला के बाल खुले हुए थे, आँखें लाल थी । लक्ष्मीबाई ने बताया- "कल ही खबर आई है, इस बहिन का पति मोर्चे पर शहीद हो गया ।" सुभाष बाबू ने सम्मान में अपनी टोपी उतार दी । बोले- "बहिन ! देवता भी तुम्हारे पति का स्थान लेने को ललचाते होंगे । मैं तुम्हारा भाई हूँ ।"

उसने अपने सुहाग की निशानी मंगल-सूत्र पलड़े पर चढ़ा दिया पर वजन अभी भी बराबर नहीं हुआ था ।

तभी वहाँ एक बूढ़ी महिला आई । वह फ्रेम में जड़ी एक तस्वीर को अपने सीने से चिपकाए थी । बोली- "यह मेरे इकलौते बेटे की तस्वीर है । जंग शुरु होने से पहले अंग्रेजों ने इसे फांसी लगा दी थी । काश ! मेरा एक और बेटा होता तो मैं उसे भी 'मादर-ए-हिन्द' के लिए चढ़ा देती ।" वृद्धा का गला भर आया । उसने तस्वीर को जमीन पर पटका, शीशा टूट गया, फोटो निकाल कर उसने हाथ में ले ली । सोने का फ्रेम पलड़े पर रख दिया । झट से तराजू के पलड़े बराबर हो गए ।

सुभाष बाबू खड़े हो गए । उन्होंने वृद्धा के चरण छुए और बोले- "कौन कहता है कि हिन्दुस्तान आजाद नहीं होगा । बहिनों, माताओं और हमारे नौजवानों का त्याग जरूर रंग लाएगा ।"

वहाँ उपस्थित लोगों से उन्होंने कहा- "मैं तुम्हारे लिए शांति का नहीं, लड़ाई का संदेश लाया हूँ । तुम आजादी चाहते हो तो बड़े से बड़े बलिदान के लिए तैयार रहो । तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा ।"

प्रश्नावली :

(क) उत्तर लिखिए -

1. "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा ।" नारा किसने दिया ?
2. नेताजी का जन्म दिन किस प्रकार से मनाया गया ?

(ख) किसने कहा -

1. "कल ही खबर आई है, इस बहिन का पति मोर्चे पर शहीद हो गया ।"
2. "बहिन ! देवता भी तुम्हारे पति का स्थान लेने को ललचाते होंगे । मैं तुम्हारा भाई हूँ ।"

पाठ बोध :

नारियों के देशप्रेम तथा बलिदान का कोई सानी नहीं ।

प्रेरक प्रसंग

माँ की सीख

प्राचीन समय में यातायात के साधन नहीं थे जितने कि आज हैं । उस समय सड़कें भी ठीक तरह से नहीं बनी हुई थीं । लोग प्रायः पैदल चलते थे या फिर घोड़े, ऊँट, हाथी आदि पर सवार होकर । अतः उस समय यात्रा करने में अत्यन्त कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था ।

चोर-लुटेरों के डर के कारण लोग ज्यादातर समूहों में ही यात्रा करते थे जिन्हें काफिला कहा जाता था । यूं तो काफिला सुरक्षा के दष्टिकोण से सही होता था, लेकिन फिर भी डाकूओं का भय तो बना ही रहता था । इसलिए व्यापारी एवं अन्य लोग प्रायः अपना सामान सांड, बैल, ऊँट, हाथी, घोड़ों के द्वारा खींची जाने वाली गाड़ियों पर लादकर ही यात्रा करते थे ।

एक बार एक बड़ा-सा काफिला अपने पड़ौसी शहर की ओर चल पड़ा । रास्ते में एक जंगल पड़ता था । जंगल में पहुँचते ही काफिले पर डकैतों ने धावा बोल दिया । सभी अपनी जान बचाकर इधर-उधर भागने लगे ।

उसी काफिले में एक नौ साल का बच्चा दीपू था । वह डकैतों से इतना

डर गया कि उसमें भागने की ताकत ही नहीं रही और वह वहीं पर खड़ा रह गया । एक डकैत ने उससे पूछा- "तुम आँखें फाड़-फाड़कर क्या देख रहे हो ? क्या तुम्हारे पास कुछ है ?"

दीपू बड़ा सीधा और भोला-भाला था, इसलिए वह झूठ बोलना जानता ही नहीं था ।

उसने सीधा-सा जवाब दिया, "हाँ मेरे पास चालीस अशर्फियाँ हैं ।"

डकैत लड़के की बात सुनकर हँसने लगा । मगर अपना संदेह दूर करने के लिए उसने पूछा- "क्या कहा ? तुम्हारे पास चालीस अशर्फियाँ हैं ।"

दीपू ने पुनः दृढ़तापूर्वक कहा- "हाँ, मेरे पास चालीस अशर्फियाँ हैं ।"

डकैत उसे उठाकर अपने प्रधान के पास ले गया और बोला- "उस्ताद ! यह कहता है कि इसके पास चालीस अशर्फियाँ हैं ।"

प्रधान ने आश्चर्य से कहा- "चालीस अशर्फियाँ !" प्रधान खूब लंबा और हट्टा-कट्टा था । उसकी बड़ी-बड़ी आँखें चमक रही थीं । उसने आँखों को फैलाकर कहा- "लड़के ! मुझे सच बता । अशर्फियाँ कहाँ हैं ?"

दीपू के मन में लेशमात्र भी छल-कपट नहीं था । उसने बिना देर लगाए अपनी मोटी कमीज उतारी और उसे पलट दिया । उसके बाद कमीज की अस्तर को खोलकर सारी अशर्फियाँ बाहर निकाल दीं । सभी डकैत यह देख हैरान रह गए । प्रधान ने कहा- "तुम्हें यह सूझ कहाँ से आई ?"

दीपू ने कहा- "यह तरकीब मेरी माँ की है ।"

डकैत ने कहा- "तुम्हें तो अशर्फियाँ लेकर भागने का अवसर भी मिला था । फिर तुम भागे क्यों नहीं ? यही नहीं, तुमने हमारे सामने सच्चाई भी प्रकट कर दी । क्या तुम्हें इस बात का डर नहीं था कि हम तुम्हारी अशर्फियाँ तुमसे छीन लेंगे ?"

प्रधान की यह बात सुनकर दीपू ने जवाब दिया- "मैं झूठ नहीं बोलता और घर छोड़ने से पहले मेरी माँ ने मुझे झूठ बोलने का सख्ती से मना किया था । उन्होंने कहा था कि झूठ बोलना पाप है ।"

छोटे से बच्चे के मुँह से इतनी बड़ी और अच्छी बात सुनकर प्रधान सोचने पर विवश हो गया ।

दीपू की बातों का प्रधान डकैत पर इतना गहरा प्रभाव पड़ा कि उसने अपने आदमियों से कहा- "देखो इस लड़के को ! यह अपनी माँ का कितना आज्ञाकारी पुत्र है । ऐसी विकट परिस्थिति में भी इसने सन्मार्ग को नहीं छोड़ा और सच ही बोला । हमें इस लड़के से कुछ सीखना चाहिए ।"

उसने अपने साथियों को आदेश दिया- "तुम लोग काफिले से लूटा हुआ सारा माल वापस कर दो ।"

उसके बाद डकैतों ने प्रधान की आज्ञा का पालन करते हुए काफिले से लूटा हुआ सारा माल और रुपए-पैसे लौटा दिए ।

फिर उन्होंने उस लड़के को धन्यवाद भी दिया क्योंकि उसने सच बोलकर उनकी आँखें खोल दी थीं । उसके बाद डकैतों ने शपथ ली- "आज के बाद वे कभी ऐसा बुरा काम नहीं करेंगे ।"

काफिले के सभी लोग अपनी सम्पत्तियों को फिर से पाकर बहुत खुश हुए और उन्होंने दीपू का दिल से शुक्रिया अदा किया ।

ईमानदारी

महात्मा गाँधी का पूरा नाम 'मोहनदास करमचंद गांधी" था । एक दिन उन्होंने अपनी माँ से "राजा हरिश्चंद्र" फिल्म देखने की इजाजत माँगी । राजा हरिश्चंद्र सत्य के पुजारी थे । उस फिल्म ने उन्हें इतना प्रभावित किया कि उन्होंने आजीवन सत्य बोलने की प्रतिज्ञा कर ली ।

ईमानदारी के मार्ग पर चलते हुए उनसे कभी भूल नहीं हुई । उन्होंने हर किसी को ईमानदारी और सच्चाई का संदेश दिया । महात्मा गांधी बचपन से ही सच्चे और ईमानदार थे । कुछ भी हो जाए झूठ बोलना उन्हें जरा भी मंजूर नहीं था ।

एक बार उनके विद्यालय का निरीक्षण किया जा रहा था । उनकी कक्षा

में भी निरीक्षक आए । उन्होंने बच्चों को (Kite) काइट, (Balloon) बैलून, (Kitchen) किचन, (Brought) ब्रॉट, (Kitten) किटन, (Kettle) केटल आदि शब्दों को सही स्पेलिंग के साथ लिखने के लिए कहा ।

गांधीजी ने सभी शब्दों की स्पेलिंग तो सही लिखी; मगर 'केटल' शब्द की स्पेलिंग नहीं जानने के कारण 'Kettel' लिख दिया । वहीं खड़े वर्ग शिक्षक ने उन्हें इशारा किया कि वह बगलवाले लड़के की कॉपी देख कर स्पेलिंग सही करले । लेकिन गांधीजी को शिक्षक की बात उचित प्रतीत नहीं हुई इसलिए उन्होंने शिक्षक के इशारे को न समझने का बहाना बनाते हुए अपनी स्पेलिंग नहीं सुधारी ।

वर्ग से परीक्षक के जाने के बाद शिक्षक ने उन्हें डाँटते हुए कहा- "मोहनदास ! तुम कितने मूर्ख हो ! मैंने तुम्हें अपने दोस्तों की कॉपियाँ देख लेने के लिए कितनी बार इशारा किया मगर तुम समझ ही नहीं पाए ।"

शिक्षक की बात सुनकर गाँधीजी अपनी जगह पर खड़े हुए और विनम्रता के साथ बोले- "सर ! मैंने अपनी माँ के सामने सदा सच बोलने

और ईमानदार बनने की प्रतिज्ञा ली है । मैं अपनी माँ की आज्ञा का उल्लंघन नहीं कर सकता और परीक्षा में किसी की नकल ईमानदारी नहीं है । सर ! मैंने इसलिए ही नकल नहीं की और अपनी गलती नहीं सुधारी । मुझे माफ कर दीजिए ।"

वर्ग शिक्षक ने उनकी बातें ध्यान से सुनी । उन्हें अपनी गलती का एहसास हुआ । वे बोले, "तुम ठीक कहते हो मोहनदास ! हमें बेईमान नहीं बनना चाहिए ।"

सच्चाई : गोपालकृष्ण गोखले

गोपाल बहुत ही शांत और संकोची स्वभाव का बालक था । वह जिस कक्षा में पढ़ता था उसके गणित के अध्यापक बहुत सख्त थे । सभी बच्चे उनसे बहुत डरते थे । एक दिन उन्होंने बच्चों को गृहकार्य के लिए कुछ सवाल दिए । साथ ही साथ उन्होंने यह भी हिदायत दी कि जो कोई भी गृहकार्य पूरा नहीं करेगा, उसे पूरे कालांश खड़ा रहने की सजा मिलेगी ।

अगले दिन भोजन के समय के बाद गणित की कक्षा थी । लंच के समय सभी बच्चे खेलने में व्यस्त थे ।

घंटी बजते ही सभी कक्षा में आकर चुपचाप बैठ गए । अध्यापक ने जो सवाल करने को दिए थे, वे किसी को भी समझ में नहीं आए थे । फिर भी अध्यापक के डर से जैसा उन्हें समझ में आया वैसा करके ले आए ।

सभी बच्चे डरे हुए थे, क्योंकि उन्हें मालूम था कि सवाल के हल ठीक नहीं हैं । अध्यापक कक्षा में आए और कॉपियाँ जाँचने लगे । वे बारी-बारी से सभी बच्चों की कापियाँ जाँचते चले गए । एक के बाद एक सभी के हल गलत थे । अध्यापक ने सभी को खड़ा कर दिया ।

सबसे अंत में गोपाल की बारी आई । उसने भी अपनी कॉपी अध्यापक को दी । अध्यापक ने देखा उसने सारे सवाल हल किए थे । अध्यापक ने प्रसन्न होकर उसे शाबाशी दी । वे उसकी प्रशंसा करने लगे ।

अपनी प्रंशसा सुनकर गोपाल रूआँसा हो गया । अध्यापक ने उसकी पीठ ठोकते हुए कहा- "बेटा ! गोपाल क्यों रो रहे हो । कक्षा में एक तुम ही तो हो जिसने सारे सवाल ठीक से हल किए हैं ।"

गोपाल ने रोते हुए बताया- "गुरूजी ! ये सारे सवाल मैंने हल नहीं किए हैं । मेरे पिताजी ने इसमें मेरी मदद की है ।"

इतना कहकर गोपाल सिर लटकाकर खड़ा हो गया । यद्यपि और बच्चों की तरह वह भी गणित के शिक्षक से डरता था, मगर वह एक ईमानदार लड़का था ।

कक्षा के सभी बच्चे सोचने लगे- "एक इसी के बचने की संभावना थी, लो अब यह भी सजा में हमारे साथ खड़ा होगा ।"

अध्यापक ने कुछ क्षण सोचकर कहा- "शाबाश बेटा ! तुम एक दिन अवश्य महान बनोगे । तुम्हारे ईमानदारी से सच बोलने के कारण मैं बहुत प्रसन्न हूँ और तुम्हें आशीर्वाद देता हूँ कि बड़े होकर देश का नाम रोशन

करो ।" यही बालक बड़ा होकर गोपालकृष्ण गोखले के नाम से प्रसिद्ध हुआ । वे देश के महान् नेता बने ।

देश को आजाद कराने में गोपालकृष्ण गोखले का बहुत बड़ा योगदान रहा ।

मातृ-पितृ-कर्तव्यनिष्ठ

शहजाद एक गरीब लकड़हारा था । वह जंगल से लकड़ियाँ काटकर लाता था । फिर उन्हें शहर में बेचकर अपनी गुजर-बसर करता था । यद्यपि वह गरीब था । पर वह अपने बूढ़े माँ-बाप की सेवा में कोई कसर नहीं छोड़ता था ।

एक दिन शहजाद जंगल से लकड़ियाँ लाने गया । जंगल में नदी के किनारे पेड़ था । पेड़ काफी विशाल था । उसने सोचा- "चलो इसी की दो चार टहनियाँ काट लेता हूँ । मेरा आज का काम पूरा हो जाएगा ।" वह पेड़ पर चढ़ा और टहनी काटने लगा । टहनी काफी मोटी थी, काटते समय उसके हाथ से कुल्हाड़ी छूटकर नीचे नदी में जा गिरी । नदी का बहाव काफी तेज था और उसे तैरना नहीं आता था । वह सोचने लगा- "अब मैं क्या करूँ ?" वह पेड़ से नीचे उतर आया ।"कुल्हाड़ी के बिना गुजारा कैसे होगा । पैसे भी नहीं है कि दूसरी कुल्हाड़ी खरीद सकूँ ।" यही सोचते-सोचते उसकी आँखें भर आईं । बूढ़े माँ-बाप का मन में ख्याल आते ही वह बुरी तरह रोने लगा । उस नदी में जल देवता रहते थे ।

शहजाद की रोने की आवाज सुनकर वे जल से बाहर आए । उन्होंने देखा एक आदमी नदी के किनारे बैठा रो रहा है । वे शहजाद से बोले- "क्यों भाई ? इस तरह रो-रोकर जंगल की शांति क्यों भंग कर रहे हो । जाओ, अपने घर जाओ ।" यह सुनकर वह और जोर से रोने लगा । जल देवता उसके पास आए और बोले, "क्या अनहोनी हो गई जो तुम इस तरह दहाड़े मार कर रो रहे हो ? अपने घर क्यों नहीं जाते ?"

शहजाद रोते-रोते बोला - "घर कैसे जाऊँ ? घर में बूढ़े माँ-बाप हैं । लकड़ियाँ बेचकर किसी तरह गुजारा होता था । अब तो वह भी नहीं हो सकेगा ।" जल देवता ने पूछा- "क्यों ऐसा क्या हो गया ?"

शहजाद बोला- "मेरी कुल्हाड़ी नदी में गिर गई है । दूसरी कुल्हाड़ी लाने के लिए मेरे पास पैसे नहीं है । अब मैं लकड़ियाँ कैसे काटूँगा । अब मैं घर जाकर माँ-बाप को क्या मुँह दिखाऊँगा ।"

जल देवता बोले- "बस इतनी-सी बात पर तुम सारा आसमान सिर पर उठाए हुए हो । ठहरो, मैं अभी तुम्हारी कुल्हाड़ी लेकर आता हूँ ।" यह कहकर उन्होनें पानीं में डुबकी लगा दी और थोड़ी देर में हाथ में एक कुल्हाड़ी लेकर जल से बाहर आए । वह कुल्हाड़ी चाँदी की थी । उन्होंने शहजाद को कुल्हाड़ी दिखाते हुए पूछा- "यही है न तुम्हारी कुल्हाड़ी ।" वह तुंरत बोला- "नहीं ! नहीं ! यह मेरी कुल्हाड़ी नहीं है ।" जल देवता पानी मे चले गए और थोड़ी देर में फिर वापस ऊपर आए । अब की बार उनके हाथ में सोने की कुल्हाड़ी थी । उन्होंने पूछा- "अच्छा यह है तुम्हारी कुल्हाड़ी ?" शहजाद बोला- "नहीं ! नहीं ! यह तो सोने की कुल्हाड़ी है । मेरी तो लोहे की थी ।"

जल देवता बोले, "इसे ले लो, इसे बेचकर तुम्हें बहुत सारा धन मिल जाएगा और तुम्हें काम भी नहीं करना पड़ेगा । शहजाद बोला- "नहीं मैं अपनी मेहनत से पेट भरता हूँ । कृपया मुझे मेरी लोहे की कुल्हाड़ी ढूँढ़कर ला दीजिए ।"

जल देवता ने फिर पानी में डुबकी लगाई । इस बार उनके हाथ में सोने और चाँदी की कुल्हाड़ी के साथ लोहे की कुल्हाड़ी भी थी । उसे देखते ही शहजाद चिल्लाया- "यही है मेरी कुल्हाड़ी ।" कहते हुए उसने अपनी लोहे की कुल्हाड़ी ली और जाने लगा ।

तभी जल देवता बोले- "ठहरो, शहजाद ! ये दोनों कुल्हाड़ियाँ भी रख लो । ये दोनों तुम्हारी ईमानदारी का ईनाम है ।" जल देवता शहजाद को दोनों कुल्हाड़ियाँ देकर पुनः जल में समा गए । शहजाद भी खुशी-खुशी अपने घर की ओर लौट पड़ा ।

वहाँ एक ही आदमी है !

यूनान में झांथस नाम का एक धनी आदमी था । तब बुद्धिमान ईसप उसके गुलाम थे ।

एक दिन की बात है । झांथस स्नान करना चाहता था । उसने ईसप को बुलाया और कहा-

"मुझे नाहना है । देख भला हौज पर कितने आदमी है ?"

उन दिनों एथेंस में सामूहिक स्नान-घर होते थे । वहाँ बड़े-बड़े हौज बने थे, जिनमें घुसकर लोग नहाते थे । लौटकर उसने अपने मालिक से कहा- "हुजूर ! हौज पर सिर्फ एक ही आदमी है ।" झांथस स्नान करने के लिए हौज की ओर चला । उसके कपड़े लेकर ईसप भी साथ चले । वे दोनों हौज के पास पहुँचे । वहाँ बड़ी भीड़ थी । स्नान करने के लिए जगह मिलना मुश्किल था । झांथस आग बबूला हो गया । उसने कड़ककर पूछा- "क्यों बे, ईसप के बच्चे ! तूने तो कहा कि हौज पर सिर्फ एक आदमी है, लेकिन यहाँ

तो आदमियों का ताँता लगा हुआ है ।

"हुजूर !" ईसप ने नम्रता से कहा- "मैं बिल्कूल झूठ नहीं बोला । आपने मुझसे पूछा था कि हौज पर कितने आदमी है ? यहाँ सिर्फ एक ही आदमी है, ऐसा अब भी मेरा कहना है ।"

"गधा कहीं का । फिर यह आदमियों का जमघट कैसा ?"

"हुजूर ! जब मैं यहाँ आ रहा था, तब रास्ते में एक बड़ा पत्थर पड़ा था । रास्ते से आने-जाने वाले लोग अचानक ठोकर खाकर गिरते थे, लेकिन उस पत्थर को सड़क से हटाने का विचार किसी के मन में नहीं आया । थोड़ी देर बाद एक आदमी वहाँ आया । उस पत्थर को देखकर थोड़ी देर के लिए वह ठिठका और उसने उस पत्थर को रास्ते से हटा दिया । बाद में वह हौज की ओर मुड़ा ।

"दूसरी बात, यहाँ एक गरीब भिखारिन बहुत देर से खड़ी थी । वह बहुत प्यासी थी, उसने सभी से बारी-बारी पानी माँगा, लेकिन किसी ने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया । हौज के पास आते ही उस आदमी का ध्यान पहले उस भिखारिन की ओर गया । उसने ही उसको पीने के लिए पानी दिया । उसके बाद वह स्नान करने लगा ।"

"यहाँ इतने लोग है, लेकिन सबके सब स्वार्थी हैं । हमें ठोकर लगी, वैसी दूसरों को भी लग सकती है, ऐसा विचार किसी के मन में नहीं आया । प्यास के मारे तड़पती हुई भिखारिन को पीने के लिए पानी देना चाहिए, ऐसी भलमनसाहत किसी माई के लाल के मन में नहीं आई । मुझे तो केवल वही आदमी इंसान दिखाई दिया । इसलिए मैंने कहा कि वहाँ सिर्फ एक आदमी है ।"

झांथस ने खुश होकर कहा- "तेरा कहना सही है । मैंने नाहक ही तुझ पर गुस्सा किया !"

मानवता सबसे बड़ा धर्म

काशी में गंगा के किनारे एक संत का आश्रम था । उसमें कई शिष्य अध्ययन करते थे । आखिर वह दिन आया जब शिक्षा पूरी होने के बाद गुरुदेव उन्हें अपना आशीर्वाद देकर विदा करने वाले थे ।

सुबह गंगा-स्नान के पश्चात् गुरुदेव और सभी शिष्य पूजा करने बैठ गए । सभी ध्यानमग्न थे कि एक बच्चे की "बचाओ ! बचाओ !!" आवाज सुनाई पड़ी । बच्चा नदी में डूब रहा था ।

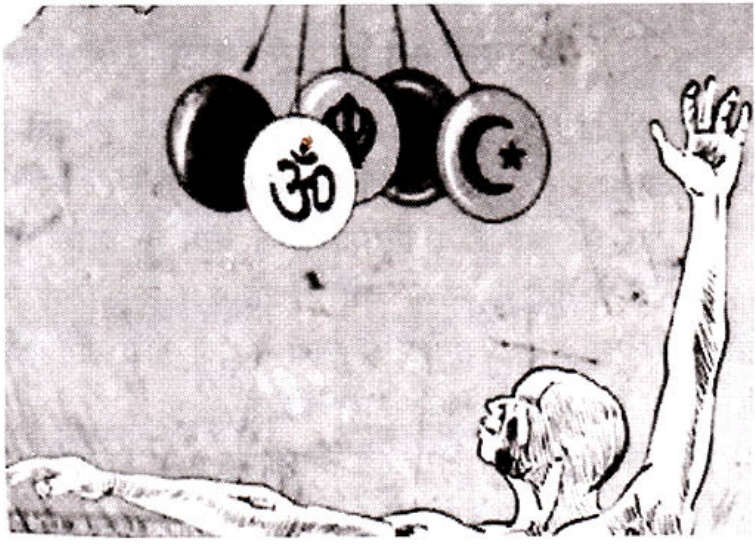

आवाज सुनकर गुरुदेव की आँखें खुल गई । उन्होंने देखा कि एक शिष्य पूजा छोड़ बच्चे को बचाने के लिए नदी में कूद गया । वह किसी तरह बच्चे को बचाकर किनारे ले आया, लेकिन दूसरे शिष्य आँखें बन्द किए ध्यानमग्न थे ।

पूजा खत्म होने के बाद गुरुदेव ने उन शिष्यों से पूछा- "क्या तुम लोगों को डूबते हुए बच्चे की आवाज सुनाई पड़ी थी ?" शिष्यों ने कहा- "हाँ गुरुदेव सुनी तो थी ।" गुरुदेव ने कहा- "तब तुम्हारे मन में क्या विचार उठा था ?" शिष्यों ने कहा- "हम लोग ध्यान में डूबे थे । दूसरी तरफ ध्यान देने की बात मन में आई ही नहीं ।"

गुरुदेव ने कहा- "लेकिन तुम्हारा एक मित्र बच्चे को बचाने के लिए पूजा छोड़कर नदी में कूद पड़ा ।" शिष्यों ने कहा- "उसने पूजा छोड़कर अध र्म किया है ।" इस पर गुरुदेव ने कहा- "अधर्म उसने नहीं, तुम लोगों ने किया है । तुमने डूबते हुए बच्चे की पुकार अनसुनी कर दी । पूजा-पाठ, धर्म-कर्म का एक ही उद्देश्य होता है- प्राणियों की रक्षा करना । तुम आश्रम में धर्मशास्त्रों, व्याकरणों, धर्म-कर्म आदि में तो पारंगत हो गये हो लेकिन धर्म का सच्चा सार नहीं समझ सके ।

निराला का निराला दान

निरालाजी हिंदी के कवि थे । उनका पूरा नाम था- सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' । उनका शरीर गठीला था । उनका मन बड़ा सरल था ।

एक बार की बात है । निरालाजी को काम के बारह सौ रुपए मिले । वे ठाठ से ताँगे में बैठकर चले जा रहे थे । उन्होंने मार्ग में एक भिखारिन को देखा । वह एक पेड़ की छाया में बैठी भीख माँग रही थी । वह फटे पुराने कपड़े पहने, हाथ पसारे बैठी थी ।

उसकी बुरी दशा थी । निरालाजी ने यकायक ताँगा रुकवाया । ताँगे से उतरकर भिखारिन के पास पहुँचे ।

उन्हें देखकर भिखारिन गिड़गिड़ाई और हाथ फैला दिये ।

निरालाजी - "क्या आज कुछ नहीं मिला ?"

बुढ़िया - "आज तो सुबह से कुछ नहीं मिला बेटा !"

निराला जी सोचने लगे - "इसने मुझे बेटा कहा । यह मेरी माँ है । निराला की माँ सड़क पर भीख माँग रही है । ऐसा कैसे हो सकता है ? उनकी आँखों में पानी भर आया । एक रुपया बुढ़िया के हाथ पर रखकर बोले- "मैं तेरा बेटा और तू मेरी माँ, अब बोल कितने दिन भीख नहीं माँगेगी ?"

भिखारन- "दो-तीन दिन नहीं माँगूगी, बेटा !"

निरालाजी- (दस रुपए बुढ़िया को देकर) "'अब कितने दिन ?"

भिखारिन- "बीस-पच्चीस दिन बेटा !"

निराला जी- "सौ रुपए दूँ तो ?"

भिखारिन- "चार-पाँच महीने तक बेटा ।"

धूप चिलचिला रही थी । बूढ़ी भिखारिन का फटा आँचल फैला हुआ था । निरालाजी उसके आँचल में पैसे डालते रहे । हर बार पूछ लेते, "अब कितने दिन भीख नहीं माँगोगी ?" माँ माँगती गई । बेटा देता गया । माँ के आँचल में रुपए पड़ते गए । इधर बेटे की जेब खाली होती गई । ताँगे वाला हक्का-बक्का देखता रहा ।

अपने पल्ले में रूपयों को देखकर बुढ़िया पागल-सी हो गई ।

भिखारिन- "कभी नहीं ! कभी नहीं !! अब कभी भीख नहीं माँगूगी, बेटा !" निरालाजी ने अपने सारे पैसे भिखारिन की झोली में डाल दिए । फिर ताँगे में बैठकर चल दिए । वे सीधे प्रसिद्ध कवयित्री महादेवी वर्मा के घर पहुँचे और उनसे कहा- "ताँगे वाले को किराए के पैसे दे दीजिए।" महादेवीजी ने उसे किराया दे दिया । इसके बाद आश्चर्य के साथ निरालाजी की ओर देखा और पूछा- "पुस्तकों के बारह सौ रुपए कहाँ गए ?"

निरालाजी -"रुपए मिल गये थे । माँ को दे दिए ।"

इसके बाद ताँगे वाले ने सारी बात बता दी । यह सुनकर महादेवीजी की आँखों में पानी भर आया ।

वास्तव में महापुरूषों का हृदय अत्यन्त सरल होता है । वे दूसरों की भलाई के लिए अपना सब कुछ लुटा देते हैं ।

इंसानियत के दर्शन

एक गरीब लड़का जो घर-घर जाकर अपना सामान बेचता था, ताकि वह अपने स्कूल की फीस दे सके, एक दिन इसी प्रकार जब वह अपने काम पर निकला तो घूमते-घूमते उसे तेज भूख लगी । उसने जब अपनी पोटली देखी तो उसमें कुछ भी नहीं था, शायद उसकी माँ उसे खाने का डिब्बा देना भूल गयी थी पर उसे भूख भी बहुत लगी हुई थी ।

वह घर-घर सामान बेचने जाता तो सोचता कि यहीं कुछ खाने के लिए मांग लूं, पर उससे यह नहीं हुआ । दूसरे घर में जाकर भी उसने कोशिश की लेकिन उससे कुछ भी नहीं हो पाया । अंततः लड़के ने फैसला किया कि अगले घर में जाकर खाने की बजाय पहले पानी के लिए पूछेगा । जैसे ही उसने अगले घर का दरवाजा खटखटाया, एक महिला बाहर आई । उस महिला ने लड़के को देखते ही उसकी हालत का अंदाजा लगा लिया तथा उसके लिए एक बड़ा-से ग्लास में दूध भरकर लाई, जिसे

वह लड़का धीरे-धीरे पीने लगा और पीने के बाद लड़के ने पूछा कि इसके मुझे कितने पैसे आपको देने होंगे ? लेकिन उस औरत ने मुस्कुराते हुए कहा कि किसी पर भी दयालुता दिखाने पर पैसे लेने नहीं चाहिए, इसलिए पैसे देने की कोई जरुरत नहीं है ।

आज उस लड़के का इंसानियत से परिचय हुआ । उस लड़के ने दिल से महिला को धन्यवाद दिया और वहाँ से निकल गया, जैसे ही उस लड़के ने वह घर छोड़ा, वह खुद को शारीरिक तथा मानसिक रूप से और अधिक मजबूत महसूस कर रहा था, अब भगवान् पर उसका विश्वास और भी ज्यादा बढ़ गया था ।

बहुत साल बीत गये वह छोटा लड़का अब एक डॉक्टर बन गया था और अपने पेशे को बड़ी ही सहजता से निभा रहा था, एक दिन उसके अस्पताल में एक महिला को लाया गया, जिसकी हालत बहुत ही गंभीर थी, जब डॉक्टर को यह पता चला कि महिला उसी के शहर की है तो वह उसे देखने तुरंत गया । डॉक्टर ने महिला को देखा तो उसे पहचान गया, यह वही औरत है, जिसने उसकी मदद की थी और एक ग्लास दूध भी दिया था ।

डॉक्टर ने पूरे जी-जान से मेहनत की और उस महिला की गंभीर बीमारी को ठीक कर दिया । महिला का बहुत ख्याल रखा गया । अंत में एक दिन वह पूरी तरह से ठीक हो गयी तो उसे छुट्टी दे दी गयी ।

उस महिला को सबसे ज्यादा डर इस बात का लग रहा था कि उसके इलाज का खर्चा बहुत ही ज्यादा हो गया होगा । वह इतने ज्यादा पैसे नहीं दे सकती थी ।

बिल थामते ही उसने जब पढ़ा तो उस पर लिखा था- फीस का भुगतान बहुत पहले ही कर दिया गया है, एक ग्लास दूध से !

ये पढ़ते ही उसकी आँखों से आँसूं बाहर आने लगे । उसने अपनी नम आंखों से भगवान् का दिल से शुक्रिया अदा किया; क्योंकि आज उसे

भी इंसानियत के दर्शन हो चुके थे ।

हमें भी अपने जीवन में बिना लालच किये दयावान बनकर परोपकार करना चाहिये और एक-दूसरे की मदद करनी चाहिये तभी हम एक आदर्श राष्ट्र का निर्माण कर पाएंगे ।

ना मन्दिर में है मौजूद, ना मस्जिद में छुपा है,
जहाँ भी है इंसानियत, वहीं पर खुदा है !

सच्ची सेवा-भावना

एक संत ने एक विद्यालय आरंभ किया । इस विद्यालय का प्रमुख उद्देश्य था- ऐसे संस्कारी युवक-युवतियों का निर्माण करना, जो समाज के विकास में सहभागी बन सकें ।

उन्होंने एक दिन अपने विद्यालय में वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया, जिसका विषय था- जीवों पर दया एवं प्राणिमात्र की सेवा ।

निर्धारित दिनांक के तयशुदा वक्त पर विद्यालय के कॉन्फ्रेस हॉल में प्रतियोगिता आरंभ हुई । किसी छात्र ने सेवा के लिए संसाधनों की महत्ता पर बल देते हुए कहा कि हम दूसरों की तभी सेवा कर सकते हैं, जब हमारे पास उसके लिए पर्याप्त साधन हों । वहीं कुछ छात्रों की यह भी राय थी कि सेवा के लिए संसाधन नहीं, भावना का होना जरूरी है ।

इस तरह तमाम प्रतियोगियों ने सेवा के विषय में शानदार भाषण दिये । आखिर में जब पुरस्कार देने का समय आया तो संत ने एक ऐसे विद्यार्थी को चुना, जो मंच पर बोलने के लिए आया ही नहीं ।

यह देखकर अन्य विद्यार्थियों और कुछ शैक्षिक सदस्यों में रोष के स्वर उठने लगे ।

संत ने सबको शांत कराते हुए कहा- "प्यारे मित्रो व विद्यार्थियो ! आप सबको शिकायत है कि मैंने ऐसे विद्यार्थी को क्यों चुना, जो प्रतियोगिता में सम्मिलित ही नहीं हुआ । दरअसल मैं जानना चाहता था कि हमारे

विद्यार्थियों में कौन सेवाभाव को सबसे बेहतर ढंग से समझता है । इसीलिए मैंने प्रतियोगिता स्थल के द्वार पर एक घायल बिल्ली को रख दिया था । आप सभी उसी द्वार से अंदर आए पर किसी ने भी उस बिल्ली की ओर आँख उठाकर भी नहीं देखा । यह अकेला ऐसा प्रतिभागी था, जिसने वहाँ रुक कर उसका उपचार किया और उसे सुरक्षित स्थान पर भी छोड़ आया । सेवा या सहायता वाद-विवाद का विषय नहीं अपितु जीवन जीने की कला है । जो अपने आचरण से शिक्षा देने का साहस न रखता हो, उसके वक्तव्य कितने भी प्रभावी क्यों न हो, वह पुरस्कार पाने के योग्य नहीं है ।"

दीप से दीप जलाओ

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर कलकत्ता में अध्यापन कार्य करते थे । वेतन का उतना ही अंश घर-परिवार के लिए खर्च करते जितने में कि औसत नागरिक स्तर का गुजारा चल जाता । शेष भाग वे दूसरे जरूरतमंदों की, विशेषतः छात्रों की सहायता में खर्च कर देते थे । आजीवन उनका यही व्रत रहा ।

वे गरीबी में पढ़े थे, यही कारण था कि वे अपनी शेष आय निर्धनों की आवश्यकताएं पूरी करने में लगा देते थे । एक दिन वे बाजार में चले जा रहे थे । एक हताश युवक ने भिखारी की तरह उनसे एक पैसा मांगा । विद्यासागर दानी तो थे पर सत्पात्र की परीक्षा किये बिना किसी की ठगी में नहीं आते थे ।

जवानी में हट्टे-कट्टे होते हुए भी युवक से भीख मांगने का कारण पूछा । सारी स्थिति जानने पर मांगने का औचित्य लगा अतः एक पैसा तो दे दिया पर उसे रोककर पूछा कि यदि अधिक मिल जाय तो क्या करोगे ? युवक ने कहा कि यदि एक रुपया मिलता तो उसका सौदा लेकर गलियों में फेरी लगाने लगूंगा और अपने परिवार का पोषण करने में स्वावलम्बी हो जाऊंगा ।

विद्यासागर ने एक रुपया उसे और दे दिया । उसे लेकर उसने छोटा

व्यापार आरंभ कर दिया । काम दिन-ब-दिन बढ़ने लगा । कुछ दिन में वह एक कुशल व्यापारी बन गया ।

एक दिन विद्यासागर उस रास्ते से निकल रहे थे कि व्यापारी दुकान से उतरा, उनके चरणों में पड़ा तथा दुकान दिखाने ले गया और कहा- "यह आप द्वारा दिये गये एक रुपया की पूंजी का चमत्कार है ।"

विद्यासागर प्रसन्न हुए और कहा- "जिस प्रकार तुमने सहायता प्राप्त करके उन्नति की, उसी प्रकार का लाभ अन्य जरूरतमंदों को भी देते रहना । मात्र उपकार मानकर ही निश्चित नहीं हो जाना चाहिए वरन् वैसा ही लाभ अन्य अनेकों को पहुंचाने के लिए, समर्थता की स्थिति में, स्वयं को भी उदारता बरतनी चाहिए ।" व्यापारी ने वैसा ही करते रहने का वचन दिया ।

महामना मालवीयजी

पण्डित मदन मोहन मालवीय जी के जीवन के शुभारंभ की अवधि की एक छोटी-सी घटना है पर वह बताती है कि महापुरूषों का बाल्यकाल असामान्य होता है ।

प्रयाग के चौक के निकट एक गली में एक बीमार कुत्ता पड़ा था । चोट लगने से उसे घाव हो गया था । कीड़े पड़ गए थे । वह छटपटाता चिल्ला रहा था, पर तमाशबीन निकल जाते थे ।

बारह बर्षीय मदन मोहन किसी काम से उधर से गुजरे । कुत्ते की पीड़ा देखकर वे दयार्द्र हो उठे, तुरंत एक डॉक्टर के पास से दवा ले आए । घाव पर दवा लगानी आरंभ की । दवा तेज थी तो कुत्ता पीड़ित अवस्था में गुर्राने, दाँत दिखाने लगा ।

कई तमाशबीनों ने कहा- "अरे बच्चे ! हट जाओ । वह तुम्हें काट लेगा ।" पर बालक ने न केवल वह दवा लगाई अपितु उसे नियमित दवा लगाकर चंगा कर दिया ।

हृदय में पीड़ितों के प्रति करुणा की भावना रखने वाले मदन मोहन ही बड़े होकर "बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय" के संस्थापक बने, पर सबसे पहले वे एक धर्मप्राण सहृदय इन्सान थे । इसी कारण वे महामना थे ।

प्रश्नावली :

(क) उत्तर लिखिए-

1. आजीवन सच बोलने की सीख महात्मा गांधी को किससे मिली ?
2. 'दीप से दीप जलाओ' प्रसंग किस समाजसेवी के जीवन की घटना पर आधारित है ।
3. निराला का पूरा नाम क्या था ?
4. घूम-घूमकर सामान बेचने वाला गरीब लड़का बड़ा होकर क्या बना ?
5. तांगेवाले को किराया किसने दिया ?
6. गोपाल का स्वभाव कैसा था ? उन्होंने गणित के प्रश्न किसकी सहायता से हल किए ?
7. निम्नांकित प्रेरक प्रसंगों से क्या सीख मिलती है -
   (अ) 'वहाँ एक ही आदमी है ।'
   (ब) 'माँ की सीख ।'

(ख) किसने कहा -

1. 'सौ रुपये दूं तो ? '
2. 'आज के बाद वे कभी ऐसा बुरा काम नहीं करेंगे ।'
3. 'आज तो सुबह से कुछ नहीं मिला बेटा ।'
4. 'हाँ, मेरे पास चालीस अशर्फियां हैं ।'
5. 'नहीं ! नहीं ! यह मेरी कुल्हाड़ी नहीं है ।'
6. 'रुपए मिल गए थे । माँ को दे दिए ।'
7. 'उसने पूजा छोड़कर अधर्म किया है ।'

(ग) वाक्य पढ़कर सही या गलत बताइए -

1. एक बालक की सच्चाई और निडरता ने डकैतों की आँखें खोल दीं । ( )
2. जहां पर है इंसानियत, वहीं पर खुदा है । ( )
3. शहजाद ने जलदेवता से सोने की कुल्हाड़ी को अपना बताकर ले ली । ( )
4. महापुरूषों का ह्रदय अत्यन्त सरल होता है । ( )
5. महात्मा गांधी ने शिक्षक के कहने से नकल कर ली । ( )
6. संत ने भाषण प्रतियोगिता में भाग न लेने वाले विद्यार्थी को पुरस्कार के लिए चुन लिया । ( )

(घ.) सही शब्द चुनकर रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिये -

(बेईमानी, निराला, मां-बाप, प्राणियों, उदारता, स्वार्थी, महापुरुष, मदद, कुत्ते, मदनमोहन मालवीय)

1. वह लकड़हारा अपने ..... की सेवा में कोई कसर नहीं छोड़ता ।
2. दूसरे की नकल करना ..... होती ।
3. ..... बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्थापक बने ।
4. यहां इतने लोग हैं लेकिन सब के सब ..... हैं ।
5. पूजा-पाठ, धर्म-कर्म का एक ही उद्देश्य होता है- ..... की रक्षा करना ।
6. ..... को काम के बारह सौ रुपये मिले ।
7. बारह वर्षीय मदन मोहन ..... की पीड़ा देख दयार्द्र हो उठे ।
8. दूसरों की भलाई करने की प्रवृत्ति ही मनुष्य को ..... बनाती है ।
9. हमें अपने जीवन में बिना लालच किए एक-दूसरे की ..... करनी चाहिए ।
10. समर्थता की स्थिति में मनुष्य को ..... बरतनी चाहिए ।

(च) निम्नाकिंत प्रसंगों को अपने शब्दों में लिखिए -

1. इंसानियत के दर्शन
2. सच्ची सेवा भावना

—: शाकाहार :—

शाक + आहार = शाकाहार – वे खाने की वस्तुएं जो पेड़–पौधों–जमीन–पानी–सूर्य की रोशनी के संयोग से बनती हैं। साथ ही शाकाहारी जानवरों यथा गाय, भैंस, बकरी का दूध भी शाकाहार में आता है।

दूध देती हुई गाय

मुर्गी देती है – अंडे

कोई कहता– संडे हो या मंडे
रोज खाओ अंडे, पर सब कहते –
पीओ खूब दूध,
पर मत खाओ तुम अंडे।

मैं सोचता– जैसे गाय देती दूध, मुर्गी देती अंडे,
जब पी सकते हैं दूध, तो क्यों न खाएं अंडे ?

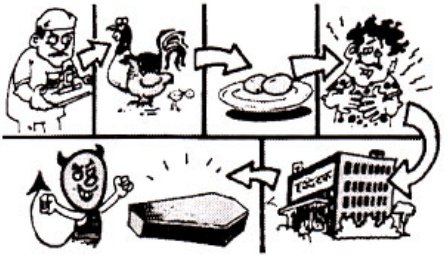

क्योंकि अंडे हैं, रोगों की जड़ और मांसाहार,

बच्चों! दूध है 'जीवनदाता', पौष्टिक शाकाहार।

जब किसी बच्चे की मां जन्म देते ही दुनिया में नहीं रहती तो वह बच्चा गाय के दूध के सहारे ही जीता है।

हुआ न दूध 'जीवनदाता'

दूध में ही मिलाकर पिलाती मां तुम्हें,
बोर्नविटा, हॉर्लिक्स या कॉम्प्लान,
इसी से तो तुम रहते स्वस्थ–तंदरुस्त,
बनते फुर्तीले और बलवान।

हुआ न दूध 'पौष्टिक'

बच्चों ! अपनाओ तुम हमेशा शाकाहार,
और शान से कहो – मैं शाकाहारी हूँ ।

हमारे घर में, हमारे पास–पड़ोस में,
हमारे समाज में कई मांसाहारी हैं,
हम शाकाहारी क्यों और कैसे बनें?

सबको बताओ–

हमारी अर्थात् मानव की शारीरिक रचना शाकाहारी प्राणी की है। निम्नांकित तालिका दिखाकर समझाओ –

क्र. सं.	शारीरिक अंग	शाकाहारी प्राणियों में (मनुष्य सहित)	मांसाहारी प्राणियों में
1.	त्वचा छिद्र	होते हैं, जिससे पसीना बाहर निकलता है।	नहीं होते हैं, ये सूर्य की गर्मी में बाहर नहीं निकलते इसलिए अतिरिक्त पानी (पसीना) जीभ से बाहर निकालते हैं।
2.	पंजे/नाखून	तीखे कठोर और बड़े नहीं होते	तीखे/पैने कठोर बड़े–बड़े होते हैं जिससे ये शिकार पर झपटकर काबू पाते हैं।
3.	दाँत–दाढ़	सामने के दाँत नुकीले एवं धारदार नहीं होते। दाढ़ें चौड़ी एवं चपटी होती हैं ताकि भोजन अच्छी तरह चबाया जा सके।	सामने के दाँत नुकीले एवं धारदार होते हैं जिससे मांस फाड़ सकते हैं। दाढ़ें चौड़ी चपटी नहीं होतीं क्योंकि इन्हें भोजन चबाने की आवश्यकता नहीं पड़ती।
4.	लार ग्रंथियां	विकसित हैं, इससे भोजन निगलने से पूर्व मुख में भोजन सुपाच्य बनता है।	छोटी/अविकसित हैं क्योंकि इन्हें अनाज या फल–सब्जी पचाने की आवश्यकता नहीं है।
5.	आँतें	आँतों की लम्बाई ज्यादा होती है क्योंकि शाकाहारी पदार्थ जल्दी खराब नहीं होते।	आँतों की लम्बाई अधिक नहीं होती जिससे शरीर में तेजी से सड़ता मांस जल्दी ही बाहर निकल जाता है।
6.	पेट में अम्ल	पेट का अम्ल अधिक तीव्र नहीं होता।	पेट में तीव्र हाइड्रोक्लोरिक अम्ल उत्पन्न होता है जिससे पशुओं की मांसपेशियां शीघ्रता से पचाई जा सके।
7.	आँखें	रात के अंधेरे में नहीं देख सकते।	चमकीली होती हैं, रात के अंधेरे में देख सकते हैं।

शाकाहारी जीवों का पाचनतन्त्र

मनुष्य का पाचन तंत्र

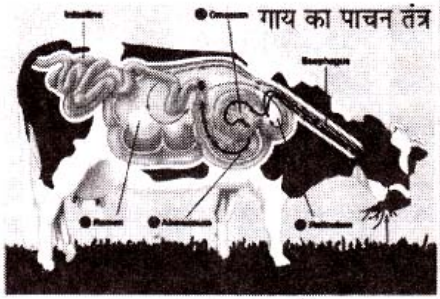

गाय का पाचन तंत्र

शाकाहारी जीवों के पाँव

मनुष्य के पाँव की आंतरिक संरचना

माँसाहारी जीवों का पाचनतन्त्र

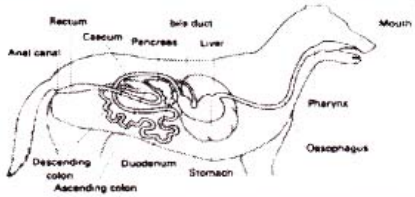

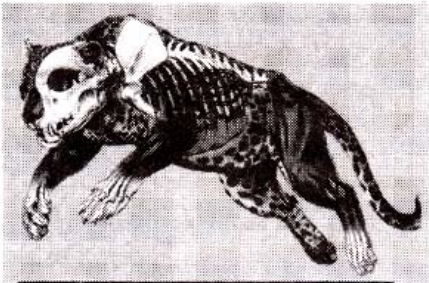

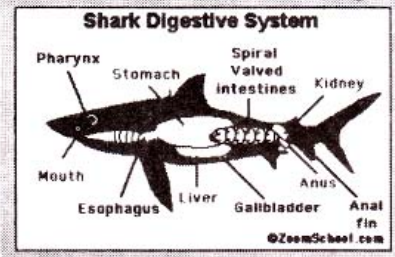

माँसाहारी जीवों के पाँव

माँसाहारी जीवों के पाँव की आंतरिक संरचना

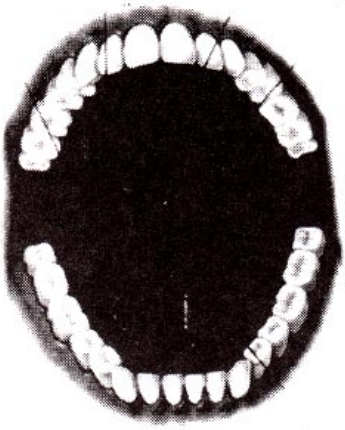

मनुष्य के मुख के अंदर का चित्र

शेर के दाँतों एवं मुख का चित्र

शार्क मछली के दाँतों एवं मुख का चित्र

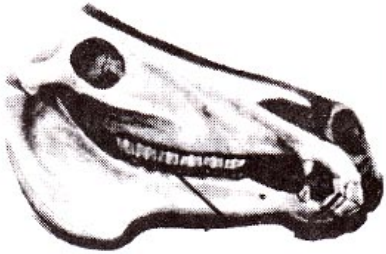

घोड़े के दाँतों का चित्र

साँप के दाँतों का चित्र

माँसाहारी प्राणियों के जबड़े एवं दाँतों के चित्र

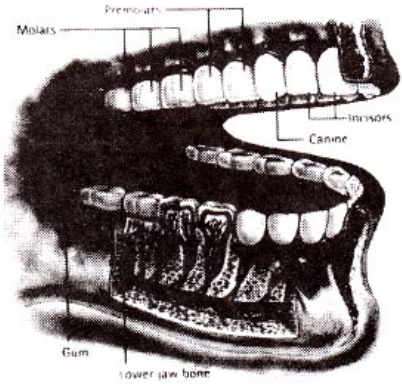

मनुष्य के जबड़े एवं दाँतों का चित्र

"क्या शाकाहार संपूर्ण आहार में आता है ?"
निश्चित रूप से हाँ
"केवल शाकाहार से हम कमजोर रह जाएंगे?"
नहीं बच्चों, कदापि नहीं।

हाथी और घोड़ा शाकाहारी जानवर हैं,
सोचो! हाथी बलवान जानवर है कि नहीं ?

घोड़ा कितना तेज दौड़ता है, देखते हो ना! टी.वी. पर, फिल्मों में।

अब हम परिचित कराते हैं आपको कुछ जानी-पहचानी विश्व प्रसिद्ध शाकाहारी हस्तियों से-

डा. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम
भूतपूर्व राष्ट्रपति

अमिताभ बच्चन
फिल्म कलाकार

श्री मनमोहन सिंह

लेखक

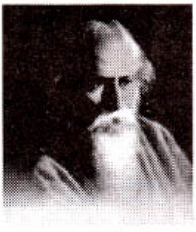

विलियम शेक्सपियर, रविन्द्रनाथ टैगोर, वात्सयेन'अज्ञेय', जार्ज बनार्डशा

वैज्ञानिक

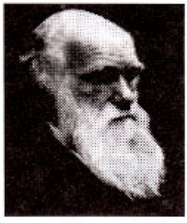

चार्ल्स डार्विन

अल्बर्ट आइंसटीन

लियो टॉलस्टाय

बेंजमिन फैंकलिन

सर इसाक न्यूटन

इसके अतिरिक्त भी प्रत्येक क्षेत्र में अनेक शाकाहारी व्यक्तियों ने प्रसिद्धि हासिल की है। जैसे-

पहलवान गुरू हनुमान

क्रिकेट खिलाड़ी अनिल कुंबले

इसी तरह अनेक विश्व प्रसिद्ध शाकाहारी महिलाएँ भी हैं, जिन्होंने हर क्षेत्र में प्रगति की है।

उदाहरणार्थ– ब्रिटिश महिला पैटरीव्ज पावर लिफ्टिंग चैम्पियन शाकाहारी हैं।

टैनिस खिलाड़ी मार्टिना नवरतिलोवा – पहले मांसाहारी थीं, दया की भावना से कई वर्षों से शाकाहारी बन गई हैं।

एशियन गेम्स 1986 में 4 स्वर्ण पदक एवं 1 रजत पदक हासिल कर विश्व रिकार्ड बनाकर भारत का मस्तक गौरवान्वित करने वाली भारतीय एथलीट पी. टी. उषा शाकाहारी हैं। अब तक अन्तरराष्ट्रीय स्तर के 101 पदक प्राप्त कर चुकी हैं।

बच्चों, इस सूची का कोई अंत नहीं है, धीरे–धीरे यह सूची बढ़ती जा रही है। तुम भी ऐसी सूची तैयार कर सकते हो और अपने मित्रों को शाकाहार के लिए प्रेरित कर सकते हो।

शाकाहार के संबंध में कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण तथ्य-

- ❖ कोई व्यक्ति पूर्ण शाकाहारी तो हो सकता है परंतु पूर्ण मांसाहारी नहीं।
- ❖ अनेक शोधों से यह सिद्ध हो चुका है कि मांसाहार रोगों का जन्मदाता है।
- ❖ विभिन्न धर्मों में मांसाहार का निषेध (मनाही) है।
- ❖ संसार के लगभग सभी महापुरुषों द्वारा मांसाहार की निन्दा की गई है।
- ❖ शाकाहार अपेक्षाकृत सस्ता पड़ता है।
- ❖ एक मांसाहारी व्यक्ति पर होने वाले खर्चे से आठ शाकाहारी व्यक्तियों का पेट भरा जा सकता है।
- ❖ शाकाहारी भोजन की तुलना में उतने ही मांसाहारी भोजन के लिए 7 गुना अधिक भूमि की आवश्यकता होती है।
- ❖ मांसाहार जल समस्या का कारण भी बनता जा रहा है। यदि एक किलो गेहूँ के लिए 50 गैलन पानी की आवश्यकता होती है तो उतने ही गौमांस उत्पादन के लिए 1000 गैलन पानी की आवश्यकता होती है।
- ❖ पृथ्वी का तापमान (ग्लोबल वार्मिंग)बढ़ने का एवं जलवायु के असामान्य होने का एक प्रमुख कारण है– मांस का उत्पादन। मांसाहार से होने वाली हानियों के प्रकाश में आने से ही विदेशों में मांसाहार का प्रतिशत कम होता जा रहा है।
- ❖ पशु–पक्षी भी सजीव प्राणी हैं, वे मनुष्य के किसी न किसी रूप में सहायक हैं जैसे गाय दूध देती है, बैल खेती में सहायक है, गधा बोझा ढोता है आदि। मनुष्य द्वारा अपने भोजन/व्यवसाय के लिए उनका बर्बरतापूर्ण कत्ल करना नैतिक दृष्टि से भी अनुचित है। इसी तरह पेड़–पौधों से भी अनाज, फल, सब्जियां प्राप्त करना गलत नहीं है परंतु पेड़ों को काटना अनुचित है।

अतः शाकाहार अपनाएं- स्वस्थ रहें। साथ ही शाकाहार को प्रोत्साहन देकर आर्थिक, नैतिक, आध्यात्मिक एवं पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में अपना अमूल्य योगदान दें।

शारीरिक रचना

मानव के शरीर की रचना माँसाहारी जीवों की रचना से पूर्णतः भिन्न है । हमारे जबड़ों की बनावट अन्य शाकाहारी प्राणियों से मिलती है जबकि माँसाहारी जीवों के जबड़ों की बनावट में काफी भिन्नता है । इसी प्रकार आँतों एवं लीवर की बनावट भी मानव और माँसाहारी प्राणियों की अलग-अलग है । जहाँ मनुष्य की आँतें जटिल और लम्बाई में अधिक हैं, वहीं माँसाहारी जीवों में यह कम लम्बाई की और अत्यन्त सरल रूप में है । भोजन पचाने में हमारी आँतों को काफी श्रम करना पड़ता है और जितना गरिष्ठ भोजन होगा आँतों पर उतना ही अधिक जोर पड़ेगा । माँसाहारी प्राणियों की भिन्न आंतरिक शारीरिक रचना के कारण वे इसे आसानी से पचा सकते हैं ।

शाकाहारी प्राणियों एवं मानव के नेत्र माँसाहारी प्राणियों से पूर्णतः भिन्न है । माँसाहारी प्राणियों के नेत्र रात्रि में देख सकते हैं । शाकाहारी प्राणी के नेत्र अंधेरे में नहीं देख सकते । प्रकृति ने इन अंतरों द्वारा स्पष्ट संकेत दिये हैं कि मानव एक शाकाहारी प्राणी है और माँसाहार उसके लिए अनुचित है । शाकाहारी एवं माँसाहारी प्राणियों की शारीरिक रचना में कितना अन्तर है और मानव शरीर की रचना किससे समानता रखती है, आगे दी गयी तालिका से यह जाना जा सकता है ।

	मांसाहारी पशु	शाकाहारी पशु	मनुष्य
1.	तीव्र, कठोर एवं बड़े-बड़े नाखून और शक्तिशाली पंजे होते हैं ।	नाखून तीव्र कठोर एवं बड़े नहीं होते ।	नाखून तीव्र कड़े एवं बड़े नहीं होते ।
2.	शरीर पर पसीने के लिए छिद्र नहीं होते, ये जिव्हा से आद्रता प्राप्त करते हैं	शरीर पर रोम छिद्र होते हैं ।	शरीर पर रोम छिद्र होते हैं ।
3.	सामने के दाँत नुकीले एवं धारदार होते हैं जिससे मांस फाड़ सकते हैं ।	सामने के दाँत नुकीले, धारदार नहीं होते ।	सामने के दाँत नुकीले, धारदार नहीं होते ।

	मांसाहारी पशु	शाकाहारी पशु	मनुष्य
4.	मुख में लार ग्रंथि पूर्ण होती है । इन्हें अनाज या फल पाचन की आवश्यकता नहीं होती ।	मुख में पूर्ण विकसित लार ग्रंथियाँ होती हैं । खाने से पूर्व मुख में लार से भोजन सुपाच्य बनाना पड़ता है ।	मुख में पूर्ण विकसित लार ग्रंथियाँ होती हैं । खाने से पूर्व मुख में लार से भोजन सुपाच्य बनाना पड़ता है ।
5.	अम्लीय लार	क्षारीय लार	क्षारीय लार
6.	भोजन चबाने के लिए चौड़ी-चपटी दाढ़ें नहीं होती ।	दाढ़ें चौड़ी एवं चपटी होती हैं ताकि भोजन अच्छी तरह चबाया जा सके ।	दाढ़ें चौड़ी एवं चपटी होती हैं ताकि भोजन अच्छी तरह चबाया जा सके ।
7.	तीव्र हाइड्रोक्लोरिक अम्ल पेट में उत्पन्न होता है जिससे पशुओं की माँसपेशियाँ शीघ्रता से पचाई जा सके ।	पेट का अम्ल मांसाहारी पशु की तुलना में 20 गुना कम तीव्र होता है ।	पेट का अम्ल मांसाहारी पशु की तुलना में 20 गुना कम तीव्र होता है ।
8.	आँतों की लम्बाई शरीर की लम्बाई की तीन गुना ही होती है जिससे शरीर में तेजी से सड़ता माँस शीघ्र ही बाहर निकल जाता है चूँकि अधिक समय तक शरीर में रहने पर सड़े माँस से टॉक्सिन्स (विशेष गैसें) आदि निकलने लगती हैं जो शरीर के लिए अत्यंत हानिकारक होती है ।	आँतों की लम्बाई शरीर से कई गुना (6 से भी अधिक) होती है । शाकाहारी पदार्थ शीघ्र ही क्षय नहीं होते अतः धीरे-धीरे शरीर से गुजरते हैं तब भी शरीर पर कोई विपरीत प्रभाव नहीं पड़ता ।	आँतों की लम्बाई शरीर से कई गुना (6 से भी अधिक) होती है । शाकाहारी पदार्थ शीघ्र ही क्षय नहीं होते अतः धीरे-धीरे शरीर से गुजरते हैं तब भी शरीर पर कोई विपरीत प्रभाव नहीं पड़ता ।

माँसाहारी जीव : शाकाहारी प्राणियों से तुलना करने पर मांसाहारी पशु एक अलग श्रेणी में आते हैं । इन मांसाहारी प्राणियों में आपस में सभी गुण एक समान होते हैं । जिससे ये शाकाहारी प्राणियों से भिन्न हो जाते हैं । मांसाहारी प्राणी अपने भोजन की तलाश में रात के अंधेरे में निकलते हैं ।

दिन में सूर्य की गर्मी से बचते हुए ये सोते रहते हैं । इस कारण इन्हें पसीना बहाने के लिए शरीर में रोम छिद्रों की आवश्यकता नहीं रहती है । ये जीभ से ही शरीर के लिए आवश्यक आद्रता प्राप्त कर लेते हैं । सरल पाचन तंत्र मांस को सड़ना प्रारम्भ होने से पूर्व ही शरीर से बाहर निकाल देता है ।

शाकाहारी जीव : शाकाहारी प्राणी घास, फल-फूल, पेड़-पौधों, वनस्पतियों पर निर्भर रहते हैं । ये जब भोजन प्रारम्भ करते हैं तो मुँह में स्थित लार-ग्रंथि से तेजी से लार बनने लगती है जो भोजन के चबाते समय उसे सुपाच्य बनाती जाती है और उसके पश्चात् भोजन मुख में पिसने के बाद पाचन तंत्र में प्रवेश करता है । इनकी आँतें अत्यंत जटिल होने के कारण भोजन धीरे-धीरे उदर में गुजरता है । शाकाहारी पदार्थ देरी से खराब होना शुरू होते हैं अतः इस जटिल प्रणाली में समय अधिक गुजरने पर भी उनका कोई घातक प्रभाव शरीर पर नहीं पड़ता है ।

न्यूयार्क के माएमोडंस मेडिकल सेंटर में वैज्ञानिक चिकित्सक *डॉ. विलियम कॉलिन्स* ने अपने शोधों से यह निष्कर्ष दिया है कि **यदि शाकाहारी प्राणी को मांसाहारी पदार्थ खिलाए जाते हैं तो वह मात्र दो महीने में ही बीमारियों से ग्रस्त हो जाता है । हृदय सम्बन्धी रोग उनमें पनपने लगते हैं । ऐसा ही प्रभाव माँसाहार का मनुष्य के शरीर पर भी पड़ता है** । शाकाहारी प्राणी सूर्योदय से सूर्यास्त तक अपना भोजन ग्रहण करते हैं । धूप में घूमते हैं जिससे त्वचा में उपस्थित लाखों रोम छिद्र पसीना उत्पन्न करते हैं और शरीर के तापमान को संतुलित करते हैं ।

मनुष्य : मनुष्य में काफी कुछ शाकाहारी जीवों से समानता है । हमारी त्वचा में लाखों रोम छिद्र हैं जिनसे त्वचा में नमी बरकरार रहती है । श्रम करने पर त्वचा में बने लाखों रोम छिद्र पसीने के माध्यम से शरीर का तापमान संतुलित बनाए रखते हैं । मुख में स्थित लार-ग्रंथि भोजन को खाते समय सुपाच्य बनाती है और भोजन पाचन तंत्र प्रणाली में पहुँचते-पहुँचते सुपाच्य हो जाता है । **अच्छी तरह चबाया गया भोजन उसमें उपस्थित विटामिन, प्रोटीन, खनिज आदि तत्त्वों को अधिक से अधिक शरीर को प्रदान करता है । जिससे शरीर का सर्वांगीण विकास अच्छी तरह होने लगता है ।**

कोई भी अण्डा शाकाहारी नहीं होता

अण्डे दो प्रकार के होते हैं, एक वे जिनसे बच्चे निकल सकते हैं तथा दूसरे वे जिनसे बच्चे नहीं निकलते। मुर्गी यदि मुर्गे के संसर्ग में न आए तो भी जवानी में अण्डे दे सकती है। इन अण्डों की तुलना स्त्री के रजः स्राव से की जा सकती है। जिस प्रकार स्त्री के मासिक धर्म होता है उसी तरह मुर्गी के भी यह धर्म अण्डों के रूप में होता है। यह अण्डा मुर्गी की आंतरिक गन्दगी का परिणाम है। आजकल इन्ही अण्डों को व्यावसायिक स्वार्थवश लोग अहिंसक, शाकाहारी, वैज आदि भ्रामक नामों से पुकारते हैं किन्तु ये शाकाहारी नहीं होते। ऐसे अण्डों की प्राप्ति भी एक जीव के अन्दर से ही होती है किसी वनस्पति से नहीं। शाकाहारी पदार्थ मिट्टी, सूर्यकिरणों व जलवायु से विभिन्न तत्व प्राप्त कर उत्पन्न होते हैं जबकि किसी भी प्रकार के अण्डे ऐसे प्राप्त नहीं होते। दोनों प्रकार के अण्डों की उत्पत्ति मुर्गी से ही होती है व दोनों के रासायनिक तत्व (Chemical Composition) में भी कोई भिन्नता नहीं होती। यदि कोई भेद करना ही हो तो ऐसे अण्डों को अपरिपक्व (Immature) मुर्दा (Dead) या भ्रूण (Still Born) भले ही कह लें किन्तु शाकाहारी कभी नहीं कह सकते। जीव वैज्ञानिक मानते हैं कि अनिषेचित अण्डों में जीवन होता है।

ऐसे अण्डों को अधिक मात्रा में प्राप्त कर धन प्राप्त करने के लिए मुर्गियों पर कैसे अत्याचार किए जाते हैं, क्या क्रूरतापूर्ण विधि अपनाई जाती है और मुर्गियों को धन्धे की दृष्टि से लाभप्रद बनाए रखने के लिए उनसे कैसे त्रासदायी वातावरण में अंण्डे दिलाए जाते हैं और वह त्रासदाई वातावरण जो मुर्गी से अण्डे में कैद होकर खाने वाले के उदर में उतर कर उसके खून में घुल-मिल जाता है, वह इस प्रकार है:

मुर्गियाँ जो अण्डे देती हैं वे सब अपनी स्वेच्छा से या स्वभावतया नहीं देतीं बल्कि उन्हें विशिष्ट हार्मोन्स और एग-फॅर्म्युलेशन के इन्जेक्शन दिए जाते हैं। इन इन्जेक्शनों के कारण मुर्गियाँ लगातार अण्डे दे पाती हैं। अण्डे के बाहर आते ही उसे इंक्यूबेटर (सेटर) में डाल दिया जाता है ताकि उसमें से 21 दिन की जगह 18 दिनों में ही चूजा बाहर आ जाए।

मुर्गी का बच्चा जैसे ही अण्डे से बाहर निकलता है, नर तथा मादा बच्चों को अलग-अलग कर दिया जाता है। मादा बच्चों को शीघ्र जवान करने के लिए एक खास प्रकार की खुराक दी जाती है और इन्हें चौबीसों घण्टे तेज प्रकाश में रखकर सोने नहीं दिया जाता ताकि ये दिन रात खा-खा कर जल्दी ही रजः स्राव करने लगें और अण्डा देने लायक हो जाएँ। अब इन्हें जमीन की जगह तंग पिंजरों में रख दिया जाता है, इन पिंजरों में इतनी अधिक मुर्गियाँ भर दी जाती हैं कि वे पंख भी नहीं फड़फड़ा सकतीं। तंग जगह के कारण आपस में चोंचें मारती हैं, जख्मी होती हैं, गुस्सा करती हैं व कष्ट भोगती हैं। जब मुर्गी अण्डा देती है तो अण्डा जाली में से किनारे पड़कर अलग हो जाता है और उसे अपनी अण्डे सेने की प्राकृतिक भावना से वंचित रखा जाता है ताकि वह अगला अण्डा जल्दी दे। जिंदगी भर पिंजरे में कैद रहने व चल फिर न सकने के कारण उसकी टाँगें बेकार हो जाती हैं। जब उसकी उपयोगिता घट जाती है तो उसे कत्लखाने भेज दिया जाता है।

इस प्रकार से प्राप्त अण्डे अहिंसक व शाकाहारी कैसे हो सकते हैं ?

❖❖❖

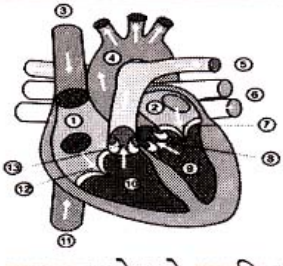

दिल के लिए फायदेमंद है शाकाहार

- एक नए शोध के मुताबिक यदि मांसाहार का सेवन छोड़कर शाकाहार अपनाया जाए, तो दिल से जुड़ी बीमारियों में ३२ फीसदी तक की कमी आ सकती है । यह शोध अमरीकी जर्नल 'क्लिनिकल न्यूट्रीशन' में छपा है ।
- शोध में सामने आया है कि शाकाहारी लोग भोजन में संतृप्त वसा (सेचुरेटेड फेट) का कम इस्तेमाल करते हैं, इस कारण उनमें कोलेस्ट्राल का स्तर और रक्तचाप नियंत्रित रहता है, जिससे दिल की बीमारी होन का खतरा कम हो जाता है ।
- शोध में 15,100 शाकाहारी और 29,400 मांसाहारी लोगों को शामिल किया गया था ।

-: पर्यावरण संरक्षण में अपना योगदान करें :-

- अपनी प्रतिदिन की धार्मिक स्तुति/पूजा के बाद प्रकृति का धन्यवाद अवश्य करें।
- समस्त प्रकृति प्रदत्त वस्तुओं का उपयोग आवश्यकतानुसार ही करें- यथा जल की हर बूंद अनमोल है - इसे अनावश्यक बर्बाद न करें, सावधान रहें- अपने व्यवसाय/उद्योग के चलते जल, वायु प्रदूषित न हो।
- शाकाहार को प्रोत्साहन देने में अपनी सक्रिय भागीदारी निभाएं- यथा आप सामर्थ्य रखते हैं तो एक मांस की दुकान को बंद करा, उसे जैविक खाद से उत्पादित किराने की दुकान प्रारंभ करने में सहयोग करें।
- धूम्रपान से वायु प्रदूषित होती है, ना आप करें, ना अपने निकट किसी को करने दे, सार्वजनिक स्थलों पर होने वाले धूम्रपान का विरोध यथाशक्ति अवश्य करें।
- 'यूज एण्ड थ्रो' अर्थात् प्लास्टिक/पेपर के कप/गिलासों/थालियों का उपयोग अति-आवश्यक होने पर ही करें, सुविधार्थ नहीं। पानी की बोतल अपने साथ रखें, संकल्प लें कि मुझे रास्ते में पानी खरीदकर नहीं पीना है।
- पॉलिथीन के उपयोग में यथासंभव कमी करें, कम से कम फलों व सब्जियों को पॉलिथीन की थैलियों में लाना बंद करें। घर से थैली लेकर बाहर निकलें।
- बिजली के समस्त उपकरणों का उपयोग आवश्यकतानुसार अवश्य करें, मात्र सुविधा हेतु नहीं, कहीं भी व्यर्थ जलती बिजली देखें तो तुरंत स्विच ऑफ करें।
- कागज का उपयोग मितव्ययता से करें, कागज की बर्बादी मतलब वृक्षों की कटाई।
- अपने वाहन को रखें चुस्त-दुरुस्त, ताकि वायु प्रदूषण कम से कम हो।
- घर बॉलकानी में यथास्थान/सुविधा तुलसी के पौधे सहित अन्य पौधे लगायें, औरों को प्रेरित करें, पौधारोपण आसपास की वायु को शुद्ध रखता है।
- सूखा-गीला कचरा नियोजित ढंग से अलग करें, कागज-प्लास्टिक रिसाइक्लिंग में दें, फल-सब्जी का कूड़ा गायों तक, बचे खाद्य पदार्थ भूखे तक पहुंचाने का प्रयास करें।
- कोई भी नई वस्तु घर में लाने से पूर्व पुरानी का निस्तारण उचित ढंग से करें। संक्षेप में सोचें कि मुझे कम से कम कूड़ा बाहर फेंकना है, मुझे पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाना है।

करुणा अन्तरराष्ट्रीय संस्थान

- **करुणा अन्तरराष्ट्रीय** एक रजिस्टर्ड मुनाफा रहित संगठन है, जो विद्यालयों/ महाविद्यालयों में करुणा क्लबों के माध्यम से विद्यार्थियों में मानवीय जीवन मूल्यों यथा- करुणा, अहिंसा, प्रेम, वैश्विक भाईचारा, प्रकृति-पर्यावरण की रक्षा एवं शाकाहार का प्रचार करता है।
- वर्तमान में देश के विभिन्न राज्यों में गठित कुल 2150 करुणा क्लबें, 39 करुणा केन्द्रों एवं 800 कार्यकर्ताओं के माध्यम से संचालित हैं।
- **भारतीय जीव-जंतु कल्याण बोर्ड** ने इस संस्थान को मान्यता प्रदान की है।
- संस्थान प्रति माह 'करुणा न्यूजलेटर' का प्रकाशन क्रमशः हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषा में करता है, जिसमें करुणा क्लबों की गतिविधियों के समाचार सचित्र प्रकाशित होते हैं।
- करुणा एवं शाकाहार संबंधी साहित्य आवश्यकतानुसार प्रकाशित/वितरित करता है, साथ ही सी.डी./डी.वी.डी तैयार/संकलित/वितरित करता है।
- राष्ट्रीय स्तर पर करुणा एवं मानवीय बोध कथाओं पर प्रतियोगी परीक्षा आयोजित करते हुए प्रतिवर्ष लगभग 3,00,000/- (तीन लाख) रुपये की राशि नगद पुरस्कार स्वरूप प्रदान की जाती है।
- मानवीय शिक्षा पर आधारित एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविर : शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रम- 5,000/- विद्यार्थी प्रशिक्षण कार्यक्रम- 3,000/- तथा अंतरविद्यालयीय प्रतियोगिताओं हेतु न्यूनतम 1,500/- एवं अधिकतम 3,000/- रुपये तक की राशि का आर्थिक सहयोग करुणा क्लबों/केन्द्रों को नियमानुसार प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने पर संस्थान द्वारा प्रदान किया जाता है।
- अखिल भारतीय/क्षेत्रीय सम्मेलनों का आयोजन कर उत्कृष्ट करुणा क्लबों (विद्यालयों) एवं विद्यार्थियों को दयावान अवार्ड के रूप में लगभग एक लाख रुपए की राशि प्रतिवर्ष प्रदान की जाती है।
- 1,00,000/- (एक लाख) रुपये के एक "करुणा रत्न अवार्ड" सहित 3,50,000/- (तीन लाख पचास हजार) रुपये के "आचार्य हस्ती करुणा अवार्ड्स" 'सुराणा एण्ड सुराणा इंटरनेशनल एटोर्नीज चेरिटेबल ट्रस्ट - चेन्नई' द्वारा प्रदान किए जाते हैं।

इंसान तो
घर-घर में
पैदा होते हैं
बस
इंसानियत
कहीं-कहीं
जन्म लेती है ।

वो हाथ सदा पवित्र होते हैं जो प्रार्थना
से ज्यादा सेवा के लिये उठे...!

Printed by : Jain Prakashan Kendra. Sowcarpet, Chennai-79. Cell : 93822 91400